حرمين

رئاسة الشؤون الدينية
بالمسجد الحرام والمسجد النبوي

उम्रा का तरीक़ा
चुनिंदा दुआओं के साथ

हरमैन-शरीफ़ैन के आगंतुकों के प्रकाशन

مطبوعات قاصد الحرمين الشريفين

برنامج قاصد الحرمين

उम्रा का तरीक़ा

चुनिंदा दुआओं के साथ

हरमैन-शरीफ़ैन के आगंतुकों के प्रकाशन

مطبوعات قاصد الحرمين الشريفين

ⓒ رئاسة الشؤون الدينية بالمسجد الحرام والمسجد النبوي، ١٤٤٦هـ

رئاسة الشؤون الدينية بالمسجد الحرام والمسجد النبوي

صفة العمرة باللغة الهندية./رئاسة الشؤون الدينية بالمسجد الحرام والمسجد النبوي - ط١. .- مكة المكرمة، ١٤٤٦هـ

٥٠ص، ١٤×٢١سم

رقم الإيداع: ١٤٤٦/١٤١٥٨

ردمك: ٤-٥٥-٨٥٠٦-٦٠٣-٩٧٨

हरमैन-शरीफ़ैन के आगंतुकों के प्रकाशन

प्रथम संस्करण

१४४६هـ/२०२५م

मुख्यालय का प्राक्कथन

हर प्रकार की प्रशंसा केवल अल्लाह के लिए योग्य है, तथा अल्लाह की दया और शांति अवतरित हो अल्लाह के रसूल, उनके परिवार, उनके सहाबा और उनके अनुयायियों पर। इसके बाद:

सर्वशक्तिमान अल्लाह ने पवित्र घर – का'बा - को क़िबला (एक दिशा) बनाया है, जिसकी ओर मुसलमानों के दिल और शरीर इकट्ठा होते हैं, तथा सारे संसारों के लिए मार्गदर्शन और एक सुरक्षित व शांतिमय हरम बनाया है, जिसका सम्मान करने से लोगों का इस जीवन और परलोक में कल्याण होता है।

हर साल लाखों मुसलमान अपने साथ अपनी आशाओं, भावनाओं और इच्छाओं को लिए हुए पवित्र भूमि पर आते हैं, साथ ही इस बारे में अपने सवालों को भी लेकर आते हैं जो उनपर उनके धर्म के प्रति अनिवार्य है तथा अपनी इबादतों और मामलों के संबंध में जिस चीज़ के बार में उन्हें उलझाव और जटिलता एवं अस्पष्टता का सामना है।

इस दृष्टिकोण से, मस्जिदे-हराम की महिमामंडन करना और उसके लोगों और उसके आगंतुकों का आदर-सम्मान करना एक कर्तव्य और एक बड़ी जिम्मेदारी थी, जिसे "मस्जिदे-हराम एवं मस्जिदे-नबवी में धार्मिक मामलों के मुख्यालय'' को उठाने और उसे सर्वोत्तम तरीके से पूरा करने का सम्मान मिला।

"हरमैन-शरीफ़ैन के आगंतुकों के प्रकाशन" नामी यह परियोजना इस धन्य देश के लोगों और पवित्र घर की सेवा करने वालों की भावनाओं की एक सच्ची अभिव्यक्ति है जो वे परम दयालु (अल्लाह) के प्रतिनिधिमंडल के प्रति रखते हैं, तथा एक बहुमूल्य उपहार की प्रस्तुति है जिसे आगंतुक अपने साथ ले जाता है और अपने देश लौटने पर उस

पर गर्व करता है।

"मस्जिदे-हराम एवं मस्जिदे-नबवी में धार्मिक मामलों का मुख्यालय"- अपने परम दयालु (अल्लाह) के मेहमान भाइयों के हाथों में उम्रा की विधि, उसके अर्कान, वाजिबात और सुन्नतों तथा एहराम के निषेधों के वर्णन के साथ-साथ चुनिंदा दुआओं (ताकि मुसलमान अपने उम्रा के दौरान इसमें व्यस्त रहे) के उल्लेख पर आधारित यह गाइडबुक प्रस्तुत करते हुए – अपने मुसलमान भाइयों से यह आशा करता है कि वे अपने धर्म की समझ हासिल करें और अपने सर्वशक्तिमान प्रभु का शुक्रिया अदा करें, जिसने उनके लिए अपने महान घर की यात्रा करना तथा पूर्ण शांति और सहजता के साथ अपने अनुष्ठानों को पूरा करना आसान बनाया।

अल्लाह हमारे और आपके अच्छे कामों को स्वीकार करे। हर प्रकार की स्तुति सारे संसारों के पालनहार अल्लाह के लिए है, तथा अल्लाह हमारे नबी मुहम्मद, उनके परिवार और उनके साथियों पर दया व शांति की वर्षा करे।

मस्जिदे-हराम एवं मस्जिदे-नबवी में

धार्मिक मामलों का मुख्यालय

प्राक्कथन

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह के लिए योग्य है। हम उसी की प्रशंसा और गुणगान करते हैं, उसी से सहायता माँगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं। हम अपनी आत्मा की बुराइयों और अपने दुष्कर्मों से अल्लाह की शरण लेते हैं। जिसे अल्लाह मार्गदर्शन प्रदान कर दे, उसे कोई पथभ्रष्ट नहीं कर सकता और जिसे वह पथभ्रष्ट कर दे, उसे कोई मार्ग दर्शाने वाला नहीं है। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं। तथा मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। अल्लाह उनपर दया और शांति अवतरित करे। इसके बाद :

"मस्जिदे-हराम एवं मस्जिदे-नबवी में धार्मिक मामलों के मुख्यालय'' की आगंतुकों के अनुभव को समृद्ध करने की इच्छा के चलते, तथा नेकी और धर्मपरायणता में सहयोग करने और धर्म के ज्ञान का प्रसार करने के लिए, उसकी इस पुस्तिका को प्रकाशित करने की चाहत हुई; ताकि यह आगंतुकों तथा उम्रा करने वालों के लिए अपने अनुष्ठानों को क़ुरआन और सुन्नत के प्रमाणों और विद्वानों के शब्दों के अनुसार अदा करने में सहायक हो। यह एक छोटी सी पत्रिका है, जो उम्रा की विधि और उसके नियमों के संबंध में बहुत लाभदायक है। तथा इस कारण कि उम्रा पूरे साल अनुमेय है, और इसके नियमों और विधि को जानने की आवश्यकता एक निरंतर और नित-नई आवश्यकता है। हज्ज के विपरीत, जिसका एक विशिष्ट समय और अवधि होती है। हमने इस पुस्तिका का प्रारंभ उम्रा की विधि के वर्णन से किया है, और इसके बाद

पवित्र क़ुरआन और प्रामाणिक सुन्नत की दुआओं का उल्लेख किया है।

हम अल्लाह से प्रार्थना करते हैं कि इस कार्य में बर्कत दे और इसे विशुद्ध रूप से अपने चेहरे के लिए बनाए और अपने मुसलमान बंदों के लिए इसे लाभकारी बनाए। तथा अल्लाह हमारे नबी मुहम्मद पर दया और शांति अवतरित करे।

मस्जिदे-हराम एवं मस्जिदे-नबवी में

धार्मिक मामलों का मुख्यालय

मीक़ात और एहराम

मीक़ात से अभिप्राय वह स्थान है जहाँ से उम्रा करने के इच्छुक व्यक्ति को एहराम बाँधना ज़रूरी होता है।

सुन्नत (हदीस) में कुछ स्थानों को निर्दिष्ट किया गया है जिनसे उम्रा करने का इरादा रखने वाले व्यक्ति को आगे बढ़ना जायज़ नहीं है, जब तक कि वह एहराम की हालत में न हो। वे पाँच मीक़ात हैं :

ज़ुल-हुलैफा : इसे अब 'अबयार अली' कहा जाता है। यह मदीना के लोगों और वहाँ से गुजरने वाले अन्य लोगों का मीक़ात है। यह मक्का से लगभग 420 किमी दूर है।

अल-जोह्फा : यह 'राबिग़' के पास एक गाँव है। यह शाम (लेवंत), मिस्र और मोरक्को के लोगों और यहाँ से गुज़रने वाले अन्य लोगों का मीक़ात है। यह मक्का अल-मुकर्रामा से लगभग 186 किमी दूर है। लोग राबिग़ से एहराम बाँधते हैं।

क़र्नुल-मनाज़िल : इसे 'अस-सैलुल-कबीर' कहा जाता है। यह नज्द के लोगों, ताइफ़ के लोगों और यहाँ से गुज़रने वाले अन्य लोगों का मीक़ात है। यह मक्का से लगभग 78 किमी दूर है, और इसके बराबर में 'वादी महरम' है। यह अल-हदा रोड की ओर से क़र्नुल-मनाज़िल का सबसे ऊँचा स्थान है। यह मक्का से लगभग 75 किमी दूर है।

यलम-लम : यह यमन के लोगों और यहाँ से गुज़रने वाले अन्य लोगों का मीक़ात है। यह मक्का से लगभग 120 किलोमीटर दूर है।

ज़ात-इर्क़ : इसे 'अज़-ज़रीबा' कहा जाता है। यह इराक़ के लोगों और

यहाँ से गुजरने वाले अन्य लोगों का मीक़ात है। यह मक्का से लगभग 100 किमी दूर है।

जो कोई भी इन मीक़ातों के अंदर रहता है, वह हज्ज और उम्रा के लिए अपने घर से ही एहराम बाँधेगा, परंतु जो मक्का में रहने वाला है वह उम्रा का एहराम बांधने के लिए हरम की सीमा से बाहर (हिल के क्षेत्र में) जाएगा। जहाँ तक हज्ज का मामला है, तो मक्का के लोग अपने घरों और अपने निवास स्थान से एहराम बाँधें गे।

चेतावनी

जो व्यक्ति हज्ज या उम्रा करने के इरादे से हवाई मार्ग से आता है, उसके लिए किसी मीक़ात के बराबर से गुज़रते समय विमान ही में एहराम बाँधना (उम्रा की नीयत करना) ज़रूरी है। उसके लिए जद्दा हवाई अड्डे पर उतरने तक एहराम बाँधने को विलंबित करना जायज़ नहीं है। क्योंकि जद्दा वहाँ के लोगों के अलावा किसी और का मीक़ात नहीं है।

यदि उसके पास एहराम का कपड़ा न हो; तो वह अपने पाजामे (पतलून) को पहने रहे और अपना कुर्ता (क़मीज़, शर्ट) उतारकर अपने दोनों कंधों और सीने पर डाल ले और एहराम बाँधने की नीयत कर ले। फिर जब वह हवाई अड्डे पर उतरे तो एहराम के कपड़े मिलने पर उसे पहन ले और अपने पाजामे (पतलून) को उतार दे।

जहाँ तक महिला का मामला है, तो उसके लिए एहराम के लिए कोई खास कपड़े नहीं हैं। इसलिए वह अपने (सामान्य) कपड़ों ही में विमान में एहराम बाँध लेगी। अगर वह बुर्का, या नक़ाब या दस्ताने पहनी हुई है, तो वह उसे उतार देगी और ग़ैर-महरम पुरुषों के सामने अपना चेहरा दुपट्टे से ढक लेगी।

उम्रा के अर्कान, वाजिबात और सुन्नतें

उम्रा के अर्कान (स्तंभ):

1. उम्रा के अनुष्ठान में दाखिल होने की नीयत करना, जिसे एहराम कहा जाता है।
2. काबा का तवाफ़ करना।
3. सफ़ा और मरवा के बीच सई करना।

- जिसने उम्रा के स्तंभों में से किसी स्तंभ को छोड़ दिया, तो उसका उम्रा तब तक सही नहीं है जब तक कि वह उसे शरई विधि के अनुसार कर नहीं लेता।

उम्रा के वाजिबात:

1. उस व्यक्ति के लिए मीक़ात से एहराम बाँधना जो उससे गुज़र रहा है। जिस व्यक्ति का स्थान मीक़ात से पीछे (अंदर) है, उसे वहीं से एहराम बाँधना होगा जहाँ से वह उम्रा प्रारंभ कर रहा है, जबकि मक्का वासी के लिए उम्रा के लिए हरम की सीमा के बाहर (हिल में) जाना आवश्यक है।
2. सिर के बाल मुँडाना या छोटे करवाना।

- जिसने उम्रा के वाजिबात में से किसी एक को छोड़ दिया, तो यदि उसने जानबूझकर ऐसा किया है, तो वह दोषी (पापी) है और उसपर फ़िद्या (छुड़ौती) अनिवार्य है। और यदि उसने जानबूझकर ऐसा नहीं किया है, तो उसपर केवल फिद्या (छुड़ौती) अनिवार्य है।

उम्रा की सुन्नतें:

- उम्रा के अर्कान और वाजिबात के अलावा जो कार्य हैं, वे सुन्नतों में से हैं, जैसे कि इज़्तिबा' और रमल करना।

- जिसने किसी सुन्नत को छोड़ दिया, उसपर कुछ भी अनिवार्य नहीं है, लेकिन वह फ़ज़ीलत से वंचित हो गया।

एहराम की अवस्था में निषिद्ध चीज़ें:

एहराम की अवस्था में निषिद्ध चीज़ों के तीन प्रकार हैं:

पहला : वे चीज़ें जो पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए निषिद्ध हैं:

1. एहराम में रहने वाले व्यक्ति के लिए उम्रा के अनुष्ठान में दाखिल होने की नीयत करने के बाद अपने बालों या नाखूनों में से कुछ भी काटना जायज़ नहीं है।
2. एहराम में रहने वाला व्यक्ति सभी प्रकार के सुगंध (इत्र) से दूर रहेगा।
3. दस्ताने पहनना जायज़ नहीं है।
4. मोहरिम (एहराम में रहने वाला व्यक्ति) विवाह का प्रस्ताव नहीं रखेगा, और न ही वह अपने लिए या किसी और के लिए विवाह का अनुबंध करेगा।
5. एहराम में रहने वाले व्यक्ति के लिए संभोग और उसके लिए प्रेरित करने वाले कारणों को करना हराम है।
6. एहराम में रहने वाला व्यक्ति जब तक एहराम की अवस्था में है, थल के जानवर का शिकार नहीं करेगा, न उसे बिदकाएगा और न उसमें किसी की मदद करेगा।

दूसरा : जो केवल पुरुषों के लिए निषिद्ध हैं, महिलाओं के लिए नहीं:

1. सिले हुए कपड़ों को उसी रूप में पहनना जायज़ नहीं है जिस रूप में उन्हें सिलवाया गया है।

2. सिर को उससे चिपकी (मिली) हुई किसी चीज़, जैसे पगड़ी या उसके जैसी किसी चीज़ से ढकना जायज़ नहीं है।

तीसरा : जो केवल महिलाओं के लिए निषिद्ध है, पुरुषों के लिए नहीं:

1. महिला के लिए बुर्के, नक़ाब या उनके जैसे किसी चीज़ से अपना चेहरा ढाँपना जायज़ नहीं है। परंतु उसे अजनबी (ग़ैर मह्रम) पुरुषों से अपना चेहरा दुपट्टे या ऐसे ही किसी अन्य चीज़ से ढाँपना चाहिए।

इनमें से किसी भी निषेध को करने वाले व्यक्ति पर निम्नलिखित नियम लागू होंगे :

- यदि उसने निषिद्ध कार्य अज्ञानता में, या भूलकर, या बाध्य किए जाने पर किया है, तो उसपर कोई पाप नहीं है और न कोई फिद्या अनिवार्य है।
- यदि उसने निषिद्ध काम किसी आवश्यकता के कारण किया है, तो उसके लिए ऐसा करना जायज़ है और उसपर फिद्या अनिवार्य है।
- यदि उसने निषिद्ध कार्य बिना किसी बहाने या आवश्यकता के किया है, तो वह पापी है और उसपर फिद्या अनिवार्य है।

फिद्या के एतिबार से एहराम की अवस्था में निषिद्ध चीज़ों के प्रकार:

पहला : बाल और नाखून काटने, इत्र लगाने, दस्ताने पहनने, पुरुष का सिले हुए कपड़े पहनने और अपना सिर ढकने, महिला के नक़ाब पहनने, वासना के साथ आलिंगन करने के संबंध में। इनमें से प्रत्येक निषेध में उसके पास तीन चीज़ों में से किसी को चयन करने का विकल्प है:

1. लगातार या अलग-अलग तीन दिनों के रोज़े रखना।

2. या छह गरीबों को खाना खिलाना, प्रत्येक गरीब व्यक्ति के लिए आधा सा' भोजन, जैसे खजूर, या चावल, या इनके अलावा कुछ और।

3. या एक बकरी ज़बह करना और उसे हरम के गरीबों में वितरित कर देना।

दूसरा : जिसने उम्रा के वाजिबात में से किसी वाजिब को छोड़ दिया, जैसे कि मीक़ात से एहराम बाँधना, तो उसपर एक फिद्या ज़बह करना अनिवार्य है, जिससे अभिप्राय वह नर या मादा भेड़ या बकरी है जो क़ुर्बानी में पर्याप्त हो। वह सारा मांस हरम के गरीबों में बांट देगा और स्वयं उसमें से कुछ भी नहीं खाएगा।

तीसरा : संभोग का फ़िद्या : जिस व्यक्ति ने सई से पहले संभोग कर लिया, तो उसका उम्रा भ्रष्ट हो गया, और उसपर उसे पूरा करना, फिर उसकी क़ज़ा करना अनिवार्य है। तथा उसपर एक फिदया ज़बह करना भी अनिवार्य है। यदि वह नहीं पाता है, तो वह दस दिन रोज़े रखेगा।

तथा जिस व्यक्ति ने सई के बाद और सिर के बाल मुँडाने या काटने से पहले संभोग किया है, तो उसका उम्रा भ्रष्ट नहीं होगा, परंतु उसपर फ़िद्या ज़बह करना अनिवार्य है। यदि वह नहीं पाता है, तो वह दस दिन रोज़े रखेगा।

चौथा: शिकार किए हुए जानवर का बदला, और इसकी दो स्थितियाँ हैं:

- यदि शिकार किए हुए जानवर का उसके समान कोई जानवर है, तो उसे तीन चीजों के बीच विकल्प दिया जाएगा :

1. या तो वह उसी समान जानवर को ज़बह करे, फिर उसे हरम में गरीबों और मिसकीनों के बीच वितरित कर दे।

2. या वह इस समान जानवर के मूल्य को देखे, फिर उस (मूल्य) के द्वारा भोजन खरीदकर उसे गरीबों में वितरित कर दे, प्रत्येक गरीब व्यक्ति के लिए आधा सा' भोजन।

3. या वह हर गरीब व्यक्ति को खाना खिलाने के बदले एक दिन का रोज़ा रखे।

- यदि जिसका शिकार किए गया है उसके समान कोई जानवर नहीं है, जैसे उदाहरण के लिए टिड्डियाँ, तो उसे दो चीजों के बीच विकल्प दिया जाएगा :

क- उसे मारे गए शिकार के मूल्य को देखना चाहिए, और उसके बराबर खाद्यान्न निकालकर उसे गरीबों को वितरित कर देना चाहिए, प्रत्येक गरीब व्यक्ति को आधा सा' देना चाहिए।

ख- या वह हर गरीब व्यक्ति को खाना खिलाने के बदले एक दिन का रोज़ा रखे।

उम्रा की विधि

जब उम्रा करने का इरादा रखने वाला व्यक्ति मीक़ात पर पहुँचे:

- उसके लिए एहराम बाँधने से पहले ग़ुस्ल करना और सुगंध (इत्र) लगाना मुस्तहब है।
- पुरुष को एक तहबंद और एक चादर पहनना चाहिए, और मुस्तहब यह है कि वे दोनों सफेद और साफ़-सुथरे हों।
- जहाँ तक महिला का संबंध है, तो वह अपनी इच्छानुसार किसी भी ढकने वाले कपड़े में एहराम बाँध सकती है, लेकिन वह नकाब और दस्ताने नहीं पहनेगी।
- वह अपने दिल में उम्रा के अनुष्ठान में प्रवेश करने का इरादा करे। उसके लिए उसका उच्चारण करना धर्मसंगत है जो उसने इरादा किया है, इसलिए वह कहेगा : "लब्बैका उम्रह" (मैं उम्रा के लिए हाज़िर हूँ) या "अल्लाहुम्मा लब्बैका उम्रह'' (ऐ अल्लाह, मैं उम्रा के लिए हाज़िर हूँ)।
- यदि एहराम बाँधने वाले को डर हो कि वह अपना अनुष्ठान पूरा नहीं कर पाएगा - क्योंकि वह बीमार है या किसी दुश्मन से डर रहा है या ऐसा ही कुछ और कारण है -; तो उसके लिए मुस्तहब है कि वह एहराम बाँधते समय यह कहे: «إِنْ حَبَسَنِيْ حَابِسٌ فَمَحِلِّيْ حَيْثُ حَبَسْتَنِيْ» "इन ह-ब-सनी हाबिसुन फ-महिल्ली हैसो हबस्तनी" (यदि मुझे कोई रुकावट पेश आ गई, तो मैं वहीं हलाल हो जाऊँगा जहाँ तू मुझे रोक दे।) इस शर्त का लाभ : यह है कि यदि मोहरिम व्यक्ति के साथ कुछ ऐसा घटित हो जाता है जो उसे अपने अनुष्ठानों को पूरा करने से रोक

देता है - जैसे बीमारी या कोई दुश्मन -; तो वह अपने एहराम से बाहर निकल सकता है और उसपर कोई भी चीज़ अनिवार्य नहीं होगी।

- मक्का के रास्ते में अधिकाधिक तल्बिया पढ़ना और उसके साथ अपनी आवाज़ बुलंद करना मुस्तहब (वांछनीय) है।

मस्जिदे-हराम में प्रवेश करने पर उम्रा करने वाला क्या करेगा:

- जब वह मस्जिदे-हराम में पहुँचे, तो प्रवेश करते समय उसे अपना दाहिना पैर पहले रखना चाहिए और यह पढ़ना चाहिए: "बिस्मिल्लाह, वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाह" (मैं अल्लाह के नाम से -प्रवेश करता हूँ - तथा दुरूद व सलाम हो अल्लाह के रसूल पर)। इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है। ''अऊज़ो बिल्लाहिल अज़ीम, व बि-वज्हेहिल करीम, व-सुल्तानिहिल क़दीम, मिनश्शैतानिर्रजीम।" (मैं महान अल्लाह, उसके दानशील चेहरे और उसके प्राचीन राज्य की शरण में आता हूँ शापित शैतान से). इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है। ''अल्लाहुम्मफ-तह् ली अब्वाबा रहमतिक'' (ऐ अल्लाह! तू मेरे लिए अपनी दया के द्वार खोल दे।)" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।
- वह तवाफ़ शुरू करने के लिए 'हज्रे-अस्वद' (काले पत्थर) के पास आएगा। वह अपने दाहिने हाथ से पत्थर को छुएगा और उसे चुंबन करेगा यदि उसके लिए ऐसा करना आसान है। यदि वह ऐसा करने में सक्षम नहीं है, तो वह अपने हाथ को चूमेगा यदि उसने अपने हाथ से उसे छुआ है। यदि वह उसे अपने हाथ से नहीं छू सका है, तो वह हज्रे-अस्वद की ओर मुँह करेगा और उसकी ओर अपने हाथ से संकेत करेगा और ''अल्लाहु अकबर'' कहेगा। लेकिन अपने हाथ

को नहीं चूमेगा। बेहतर यह है कि वह भीड़ न लगाए कि लोगों को कष्ट पहुँचाए और सव्यं कष्ट उठाए।

- हज्रे-अस्वद को छूते समय ''बिस्मिल्लाह, अल्लाहु अकबर'' कहे।
- फिर वह उसके दाईं ओर जाए और काबा को अपने बाईं ओर रखते हुए परिक्रमा करे। जब वह रुक्ने-यमानी (यमन की दिशा वाले कोने) पर पहुँचे, तो वह उसे चूमे बिना छूए। (यदि न छू सके तो) उसकी ओर इशारा न करे, न ही ''अल्लाहु अकबर'' कहे। तथा उसपर भीड़ न लगाए। दोनों कोनों के बीच वह दुआ पढ़े जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सिद्ध है: ﴿رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِي ٱلدُّنۡيَا حَسَنَةٗ وَفِي ٱلۡأٓخِرَةِ حَسَنَةٗ وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ﴾ "रब्बना आतिना फिद्दुन्या हसनतन, व फिल-आख़िरति हसनतन, व-क़िना अज़ाबन्नार" (ऐ हमारे पालनहार! हमें दुनिया में भलाई प्रदान कर और आख़िरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से सुरक्षित रख।) [सूरतुल बक़रा: 201].
- "इज़्तिबा''' तवाफ़ की शुरुआत से उसके अंत तक है। इज़्तिबा' की विधि यह है कि : वह अपने दाहिने कंधे को खोल ले। जब वह तवाफ से फारिग़ हो जाए, तो अपने दोनों कंधों को ढक ले।
- 'रमल' केवल पहले तीन चक्करों में करना है। रमल : छोट-छोटे पगों के साथ तेज़ी से चलने को कहते हैं।
- जब वह तवाफ़ के सात चक्कर पूरे कर ले, तो यदि उसके लिए आसान हो तो वह मक़ामे-इबराहीम के पास जाए और दो रकअत नमाज़ अदा करे, पहली रकअत में सूरतुल-फातिहा और सूरतुल-काफिरुन पढ़े, तथा दूसरी में सूरतुल-फातिहा और सूरतुल-इख़लास पढ़े।

- फिर, जब वह नमाज़ से फारिग़ हो जाए, तो उसके लिए यह मुस्तहब है कि यदि वह सक्षम हो तो ज़मज़म का पानी पिए, फिर हज्रे-अस्वद के पास जाए और हो सके तो उसे चूमे या स्पर्श करे।।
- फिर वह सफ़ा (पहाड़ी) के पास जाए और जब वह उसके पास पहुँचे, तो यह पढ़े : ﴿إِنَّ ٱلصَّفَا وَٱلۡمَرۡوَةَ مِن شَعَآئِرِ ٱللَّهِۖ فَمَنۡ حَجَّ ٱلۡبَيۡتَ أَوِ ٱعۡتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَاۚ وَمَن تَطَوَّعَ خَيۡرٗا فَإِنَّ ٱللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ﴾ "निःसंदेह सफ़ा और मरवा अल्लाह की निशानियों में से हैं। अतः जो कोई इस घर का हज्ज करे या उम्रा करे, तो उसपर कोई दोष नहीं कि इन दोनों का तवाफ़ करे। और जो कोई स्वेच्छा से भलाई का कार्य करे, तो निःसंदेह अल्लाह (उसकी) क़द्र करने वाला, सब कुछ जानने वाला है।" [सूरतुल बक़रह : 158], वह इस आयत को सफा के पास पहुँचकर, पहाड़ पर चढ़ने से पहले पढ़ेगा, तथा वह इसे केवल इसी स्थान पर और सिर्फ़ पहले चक्कर की शुरुआत में पढ़ेगा, इसे वह हर चक्कर में नहीं दोहराएगा।।
- फिर वह सफ़ा पर चढ़ जाए यहाँ तक कि वह काबा को देख ले, फिर वह उसकी ओर अपना मुँह करे और ''अल्लाहु अक्बर'' (अल्लाह सबसे बड़ा है) कहे। तथा अपने दोनों हाथ उठाकर अल्लाह की प्रशंसा करे और उससे दुआ करे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह दुआ वर्णित है: «لاَ إِلَـهَ إِلاَّ اللـهُ وَحْـدَهُ لاَ شَرِيْـكَ لَـهُ، لَـهُ الْمُلْـكُ وَلَـهُ الْحَمْـدُ، وَهُـوَ عَـلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْـرٍ. لاَ إِلَـهَ إِلاَّ اللـهُ وَحْـدَهُ، أَنْجَـزَ وَعْـدَهُ، وَنَـصَرَ عَبْـدَهُ، وَهَـزَمَ الأَحْـزَابَ وَحْـدَهُ» "ला इलाहा इल्लल्लाह, वह्दहू ला शरीका लह, लहुल-मुल्को व लहुल-ह़म्द, व हुआ अला कुल्लि शैइन क़दीर। ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू, अन्जज़ा वा'दहू, व न-स-रा अब्दहू , व ह-ज़-मल अह्ज़ाबा वह्दहू" (अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य

नहीं। वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं। उसी के लिए प्रभुत्व है, और उसी के लिए हर प्रकार की प्रशंसा है। और वह हर चीज़ पर सर्वशक्तिमान है। अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं, वह अकेला है, उसने अपना वचन पूरा किया और अपने बंदे की सहायता की और अकेले ही सारे जत्थों को पराजित किया।) वह इस दुआ को तीन बार दोहराए और इसके बीच जो चाहे दुआ करे।

- फिर वह सफा से उतरकर मरवा की ओर जाए और सामान्य गति से चलते हुए, अल्लाह के ज़िक्र में व्यस्त रहे और जितना हो सके - अपने लिए तथा अपने परिवार और अपने प्रियजनों के लिए – दुआ करता रहे, यहाँ तक कि वह हरे निशान (ग्रीन लाइट) की शुरुआत तक पहुँच जाए। फिर वह जितना हो सके तेजी से दौड़े, यहाँ तक कि वह दूसरे हरे निशान (ग्रीन लाइट) तक पहुँच जाए। फिर वह सामान्य गति से चले और तब तक चलता रहता है जब तक कि वह मरवा पर न पहुँच जाए। जब वह मरवा पर पहुँच जाए और उसपर चढ़ जाए, तो वह क़िबला की ओर मुँह करके वही दुआएँ पढ़े जो उसने सफ़ा पर पढ़ी थीं।
- इस तरह वह सात चक्कर सई करे, सफ़ा से मरवा तक एक चक्कर और मरवा से सफ़ा तक दूसरा चक्कर होगा। जब वह दो हरे निशानों के बीच पहुँचे, तो वह अपने आस-पास के लोगों को कष्ट पहुँचाए बिना दौड़े। इसी तरह करते हुए वह सात चक्कर पूरे करे।
- फिर वह अपने सिर के बाल मुंडवाए, या छोटे करवाए, जबकि महिला अपने बालों को इकट्ठा करके उससे उंगली के एक पोर के बराबर काट ले।
- इन कार्यों के साथ, उम्रा पूरा हो गया और एहराम के कारण जो कुछ उसपर हराम हो गया था, उसके लिए हलाल हो गया।

अल्लाह तआला हमारे नबी मुहम्मद, आपके परिवार और आपके सभी साथियों पर दया एवं शांति अवतरित करे।

चुनिंदा दुआएँ

- اللَّهـمَّ لـكَ الحمـدُ، حمـدًا كثـيرًا طيِّبًـا مبـاركًا فيـه، كـما تُحـبُّ ربَّنـا وتـرضى، حمـدًا لا ينقطـعُ ولا يَبِيـدُ، ولا يفنـى، مِـلْءَ سـماواتِكَ، ومِـلءَ أرضِـكَ، ومِـلْءَ مـا شـئتَ مـن شيءٍ بعـدُ، عـددَ مـا حمِـدَكَ الحامـدونَ، وعـددَ مـا غفـلَ عـن ذكـركَ الغافلـونَ، والصَّـلاةُ والسَّـلامُ عـلى عبـدِكَ ورسـولِكَ محمَّـدٍ، خاتـمِ أنبيائِـكَ ورُسُـلِكَ، وخيرتِـكَ مـن خلقِـكَ، وأمينِـكَ عـلى وحيِـكَ، وعـلى آلِـهِ، وصحبِـهِ أجمعـينَ.

ऐ अल्लाह! हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल तेरे लिए है, बहुत अधिक, पवित्र और धन्य प्रशंसा, जैसा कि ऐ हमारे पालनहार! तू चाहता और पसंद करता है। ऐसी प्रशंसा जिसका सिलसिला बंद नहीं होता, तथा जो समाप्त और नष्ट नहीं होती। तेरे आकाशों भर, तेरी पृथ्वी भर और उस चीज़ के भर जो तू उसके बाद चाहे, उन लोगों की संख्या के बराबर जो तेरी प्रशंसा करते हैं, तथा उन लोगों की संख्या के बराबर जो तेरे स्मरण से गाफिल रहते हैं। तथा दया और शांति अवतरित तेरे सेवक और रसूल मुहम्मद पर, जो तेरे नबियों और रसूलों की मुहर, तेरी सृष्टि में सबसे श्रेष्ठ और तेरी वह्य के अमीन (संरक्षक) हैं, तथा उनके परिवार और उनके सभी साथियों पर।

- اللَّهـمَّ لـكَ الحمـدُ، أنـتَ نـورُ السَّـماواتِ والأرضِ ومـن فيهـنَّ، ولـكَ الحمـدُ، أنـتَ قيُّـومُ السَّـماواتِ والأرضِ ومَـنْ فيهـنَّ، ولـكَ الحمـدُ، أنـتَ الحـقُّ، ووعـدُكَ حـقٌّ، وقولُـكَ حـقٌّ، ولقـاؤُك حـقٌّ، والجنَّـةُ حـقٌّ، والنَّـارُ حـقٌّ، والسَّـاعةُ حـقٌّ، والنَّبيُّـونَ حـقٌّ، ومحمَّـدٌ ﷺ حـقٌّ.

"अल्लाहुम्मा लकल ह़म्दु, अन्ता नुरुस-समावाति वल-अर्ज़ि व मन फीहिन्ना, व लकल ह़म्दु अन्ता क़य्यूमुस-समावाति वल-अर्ज़ि व मन् फीहिन्ना, व लकल ह़म्दु अन्तल-हक़्क़ु, व वा'दुका हक़्क़ुन, व क़ौलुका

हक़्क़ुन, व लिक़ाउका हक़्क़ुन, वल-जन्नतु हक़्क़ुन, वन्नारु हक़्क़ुन, वस्साअतु हक़्क़ुन, वन्-नबिय्यूना हक़्क़ुन, व मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हक़्क़ुन।" (ऐ अल्लाह! तेरे ही लिए सब प्रशंसा है, तू ही आकाशों और धरती का प्रकाश है और उनका भी (प्रकाश है) जो उनमें हैं। और तेरे ही लिए सब प्रशंसा है तू ही आकाशों और धरती का थामने वाला है। और तेरे ही लिए सब प्रशंसा है, तू सत्य है, तेरा वादा सत्य है, तोरी बात सत्य है, तेरी मुलाक़ात सत्य है, जन्नत सत्य है, जहन्नम सत्य है, क़ियामत सत्य है, सब नबी सत्य हैं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सत्य हैं।)

- اللَّهـمَّ لـكَ أسـلمتُ، وعليـكَ توكَّـلتُ، وبـكَ آمنـتُ، وإليـكَ أنبـتُ، وبـكَ خاصمـتُ، وإليـكَ حاكمـتُ، فاغفِـرْ لي مـا قدَّمـتُ ومـا أخَّـرتُ، ومـا أسررتُ ومـا أعلنـتُ، أنـتَ المقـدِّمُ، وأنـتَ المؤخِّـرُ، لا إلـه إلَّا أنـتَ، ولا حـولَ ولا قـوَّةَ إلَّا باللـهِ العـليِّ العظيـمِ.

"अल्लाहुम्मा लका अस्लमतु, व-अलैका तवक्कलतु, व-बिका आमन्तु, व-इलैका अनब्तु, व-बिका ख़ासम्तु, व-इलैका ह़ाकम्तु, फ़ग़्फ़िरली मा क़द्दम्तु वमा अख़्खरतु, वमा असरर्तु वमा आलन्तु, अन्तल मुक़द्दिमु, व अन्तल मुअख़्ख़िरु, ला इलाहा इल्ला अन्ता, वला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम।" (ऐ अल्लाह! मैं तेरे लिए मुसलमान (आज्ञाकारी) हुआ, और तुझी पर मैंने भरोसा किया और तुझी पर मैं ईमान लाया, और तेरी ही तरफ़ लौटा, और तेरी ही ओर मैं अपना झगड़ा लेकर गया, और तेरी ही ओर निर्णय के लिए गया। इसलिए मेरा वह गुनाह बख़्श दे जो मैंने पहले किया और जो पीछे किया और जो मैंने छिपा कर किया और जो मैंने ज़ाहिर में किया। तू ही आगे करने वाला और तू ही पीछे रखने वाला है। तेरे सिवा कोई सच्चा

पूज्य नहीं। तथा सर्वोच्च और महान अल्लाह की तौफीक़ के बिना न बुराई से बचने की शक्ति है और न नेकी करने की ताक़त।)

- اللَّهمَّ آتِ نفسي تقواها، وزكِّها أنتَ خيرُ من زكَّاها، أنتَ وليُّها ومَوْلاها.

''अल्लाहुम्मा आति नफ़्सी तक़्वाहा, व ज़क्किहा अन्ता ख़ैरु मन् ज़क्काहा, अन्ता वलिय्युहा व मौलाहा'' (ऐ अल्लाह! मेरी आत्मा को परहेज़गारी प्रदान कर और उसे पवित्र कर दे, तू ही उसको बेहतर पवित्र करने वाला है, तू ही उसका संरक्षक और स्वामी है।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أعـوذُ بـكَ مـن علـمٍ لا ينفـعُ، ومـن قلـبٍ لا يخشـعُ، ومـن نفسٍ لا تشـبعُ، ومـن دعـوةٍ لا يُسـتَجابُ لها.

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिन् इल्मिन ला यन्फ़ओ, व मिन क़ल्बिन ला यख़्शओ, व मिन नफ़्सिन ला तश्बओ, व मिन दा'वतिन ला युस्तजाबु लहा'' (ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण चाहता हूँ ऐसे ज्ञान से जो उपयोगी नहीं है, और ऐसे दिल से जो डरता नहीं है, और ऐसी आत्मा से जो संतुष्ट नहीं होती है और ऐसी दुआ से जो क़बूल नहीं की जाती।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أسـألُكَ بـأنَّ لـكَ الحمـدَ، لا إلـهَ إلَّا أنـتَ، بديـعَ السَّـماواتِ والأرضِ، يـا ذا الجـلالِ والإكـرامِ، يـا حـيُّ يـا قيُّـومُ، أن تغفـرَ لي وترحمَنـي، وإذا أردتَ بقـومٍ فتنـةً فاقبضْنـي إليـكَ غـيرَ مفتـونٍ.

"अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका बि-अन्ना लकल ह़म्दु, ला इलाहा इल्ला अन्त, बदीउस्समावाति वल-अर्ज़ि, या ज़ल-जलालि वल-इकरामि, या ह़य्यु या क़य्यूमु, अन् तग़फ़िरा ली व-तर-ह-मनी, व-इज़ा अरद्ता फ़ित्नतन फ़ी क़ौमिन फ़-तवफ़्फ़नी ग़ैरा मफ़्तूनिन," (ऐ अल्लाह! मैं तुझसे माँगता हूँ इस बात के हवाले से कि हर प्रकार की प्रशंसा तेरे ही लिए है, तेरे सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं, तू आकाशों तथा धरती

को बिना पूर्व उदाहरण के बनाने वाला है, ऐ महिमा और सम्मान वाले! ऐ परम जीवित! ऐ सब कुछ थामने वाले, यह कि तू मुझे क्षमा कर दे और मुझ पर दया कर, और जब किसी समुदाय को परीक्षा में डालना चाहे, तो मुझे परीक्षा में डाले बिना मृत्यु दे दे।)

﴿رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِي ٱلدُّنۡيَا حَسَنَةٗ وَفِي ٱلۡأٓخِرَةِ حَسَنَةٗ وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ﴾ [البقرة: ٢٠١].

“रब्बना आतिना फिद्दुन्या हसनतन, व फिल-आख़िरति हसनतन, व-क़िना अज़ाबन्नार” (ऐ हमारे पालनहार! हमें दुनिया में भलाई प्रदान कर और आख़िरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से सुरक्षित रख।)

﴿رَبَّنَآ ءَامَنَّا فَٱغۡفِرۡ لَنَا وَٱرۡحَمۡنَا وَأَنتَ خَيۡرُ ٱلرَّٰحِمِينَ﴾ [المؤمنون: ١٠٩].

‘‘रब्बना आमन्ना, फ़ग़्फ़िर लना वर-हम्ना, व अन्ता ख़ैरुल-ग़ाफिरीन’’ (ऐ हमारे पालनहार! हम ईमान ले आए। अतः तू हमें क्षमा कर दे और हमपर दया कर। और तू सब दया करने वालों से बेहतर है।)

﴿رَبَّنَا لَا تُزِغۡ قُلُوبَنَا بَعۡدَ إِذۡ هَدَيۡتَنَا وَهَبۡ لَنَا مِن لَّدُنكَ رَحۡمَةً إِنَّكَ أَنتَ ٱلۡوَهَّابُ﴾ [آل عمران: ٨].

“रब्बना ला तुज़िग़ क़ुलूबना बा’दा इज़् हदैतना व-हब् लना मिन् लदुन्का रह़मतन इन्नका अन्तल-वह्हाब्” (ऐ हमारे पालनहार! हमारे दिलों को (सत्य से) विचलित न कर, इसके बाद कि तूने हमें मार्गदर्शन प्रदान किया और हमें अपने पास से दया प्रदान कर। निःसंदेह तू महान दाता है।)

﴿رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذۡنَآ إِن نَّسِينَآ أَوۡ أَخۡطَأۡنَاۚ رَبَّنَا وَلَا تَحۡمِلۡ عَلَيۡنَآ إِصۡرٗا كَمَا حَمَلۡتَهُۥ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِنَاۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلۡنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِۦۖ وَٱعۡفُ عَنَّا وَٱغۡفِرۡ لَنَا وَٱرۡحَمۡنَآۚ أَنتَ مَوۡلَىٰنَا فَٱنصُرۡنَا عَلَى ٱلۡقَوۡمِ ٱلۡكَٰفِرِينَ﴾ [البقرة: ٢٨٦].

''रब्बना ला तुवाख़िज़्ना इन् नसीना अव अख़्ता'ना, रब्बना वला तहमिल अलैना इस्रन कमा ह़मल्तहू अलल-लज़ीना मिन् क़बलिना, रब्बना वला तुह़म्मिलना मा ला ताक़ता लना बिहि, वा'फ़ु अन्ना वग़्-फ़िर लना वर-ह़म्ना, अन्ता मौलाना, फ़न्सुर्ना अलल-क़ौमिल काफ़िरीन'' (ऐ हमारे पालनहार! हमारी पकड़ न कर यदि हम भूल जाएँ या हमसे चूक हो जाए। ऐ हमारे पालनहार! और हमपर कोई भारी बोझ न डाल, जैसे तूने उसे उन लोगों पर डाला जो हमसे पहले थे। ऐ हमारे पालनहार! और हमसे वह चीज़ न उठवा जिस (के उठाने) की हम में शक्ति न हो। तथा हमें माफ़ कर और हमें क्षमा कर दे और हमपर दया कर। तू ही हमारा स्वामी (संरक्षक) है, इसलिए काफ़िरों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर।)

﴿رَبِّ ٱجۡعَلۡنِي مُقِيمَ ٱلصَّلَوٰةِ وَمِن ذُرِّيَّتِيۚ رَبَّنَا وَتَقَبَّلۡ دُعَآءِ ۝٤٠ رَبَّنَا ٱغۡفِرۡ لِي وَلِوَٰلِدَيَّ وَلِلۡمُؤۡمِنِينَ يَوۡمَ يَقُومُ ٱلۡحِسَابُ﴾ [إبراهيم: ٤٠-٤١]..

''रब्बिज्-अल्नी मुक़ीमस्सलाति व-मिन् ज़ुर्रिय्यती रब्बना व-तक़ब्बल दुआ, रब्बनग़्-फिर्ली वलि-वालिदय्या वलिल-मू'मिनीना यौमा यक़ूमुल-हिसाब'' (ऐ मेरे पालनहार! मुझे नमाज़ क़ायम करने वाला बना तथा मेरी संतान में से भी। ऐ हमारे पालनहर! और मेरी दुआ स्वीकार कर। ऐ हमारे पालनहार! मुझे क्षमा कर दे तथा मेरे माता-पिता को और ईमान वालों को, जिस दिन हिसाब लिया जाएगा।

﴿رَبَّنَا هَبۡ لَنَا مِنۡ أَزۡوَٰجِنَا وَذُرِّيَّٰتِنَا قُرَّةَ أَعۡيُنٖ وَٱجۡعَلۡنَا لِلۡمُتَّقِينَ إِمَامًا﴾ [الفرقان: ٧٤].

''रब्बना हब् लना मिन् अज़्वाजिना व-ज़ुर्रिय्यातिना क़ुर्रता आ'युनिन वज्-अल्ना लिल्मुत्तक़ीना इमामा'' (ऐ हमारे पालनहार! हमें हमारी पत्नियों और हमारी संतान से आँखों की ठंडक प्रदान कर और हमें परहेज़गारों का नायक बना दे।)

﴿رَبَّنَآ ءَاتِنَا مِن لَّدُنكَ رَحۡمَةٗ وَهَيِّئۡ لَنَا مِنۡ أَمۡرِنَا رَشَدٗا﴾ [الكهف: ١٠].

रब्बना आतिना मिन् लदुन्का रह्मतन व-हय्यि' लना मिन् अम्रिना रशदा" (ऐ हमारे पालनहार! हमें अपने पास से दया प्रदान कर और हमारे लिए हमारे मामले में मार्गदर्शन (सीधे रास्ते पर चलने) को आसान कर दे।)

﴿رَبَّنَا وَءَاتِنَا مَا وَعَدتَّنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخۡزِنَا يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِۗ إِنَّكَ لَا تُخۡلِفُ ٱلۡمِيعَادَ﴾

[آل عمران: ١٩٤].

"रब्बना व आतिना मा वअद्तना अला रुसुलिक, वला तुख़ज़िना यौमल क़ियामह, इन्नका ला तुख़लिफ़ुल मीआद" (ऐ हमारे पालनहार! और हमें वह चीज़ प्रदान कर जिसका तूने अपने रसूलों के द्वारा हमसे वादा किया है तथा क़ियामत के दिन हमें अपमानित न कर। वास्तव में, तू अपने वादे के विरुद्ध नहीं करता है।)

- اللَّهمَّ إنِّي أسألُكَ الهُدى، والتُّقى، والعفافَ، والغنى.

"अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकल-हुदा वत्तुक़ा, वल-अफ़ाफ़ा वल-ग़िना" (ऐ अल्लाह! मैं तुझसे मार्गदर्शन, परहेज़गारी, हराम से पवित्रता और (अल्लाह के अलावा से) बेनियाज़ी माँगता हूँ।)

- اللَّهمَّ اقسِمْ لي من خشيتِكَ ما تحولُ بهِ بيني وبينَ معصيتِكَ، ومِنْ طاعتِكَ ما تُبلِّغني به جنَّتَكَ، ومن اليقينِ ما تُهوِّنُ بهِ عليَّ مصائبَ الدُّنيا، ومتِّعني بسمعي، وبصري، وقوَّتي أبدًا ما أبقيتَني، واجعلْهُ الوارثَ منِّي، واجعَلْ ثأري على مَنْ ظلمني، وانصُرْني على من عاداني، ولا تجعَلْ مصيبتي في ديني، ولا تجعَلِ الدُّنيا أكبرَ همِّي، ولا مبلغَ علمي، ولا إلى النَّارِ مصيري، واجعلِ الجنَّةَ هي داري، ولا تُسلِّطْ عليَّ بذنوبي من لا يخافُكَ، ولا يرحمُني، برحمتِك يا أرحمَ الرَّاحمينَ.

अल्लाहुम्मक़्-सिम् ली मिन् ख़श्यतिका मा तहूलो बिही बैनी व बैना मा'सियतिका, वमिन् ताअतिका मा तुबल्लिग़ुनी बिही जन्नतका, व-मिनल-यक़ीनि मा तुहव्विनो बिही अलैया मसाईबद्दुन्या, व मत्ते'नी बि-सम्ई, व बसरी, व क़ुव्वती अबदन मा अब्क़ैतनी, वज्-अल्हुल-वारिसा मिन्नी, वज्-अल सा'री अला मन् ज़-ल-मनी, वन्सुर्नी अला मन आदानी, वला तज्-अल मुसीबती फी दीनी, वला तज्-अलिद्दुन्या अक्बरा हम्मी, वला मब्लग़ा इल्मी, वला इलन्नारि मसीरी, वज्अलिल-जन्नता हिया दारी, वला तुसल्लित् अलैया बि-ज़ुनूबी मन् ला यख़ाफ़ुका वला यर्-हमुनी, बि-रहमतिका या अर्हमर्राहिमीन" (ऐ अल्लाह! तू मुझे अपने डर का इतना अंश प्रदान कर, जो मेरे और तेरी अवज्ञाओं के बीच बाधा बन जाए, और अपनी आज्ञाकारिता का इतना हिस्सा प्रदान कर जिसके द्वारा तू मुझे अपनी जन्नत तक पहुँचा दे, और मुझे इतना यक़ीन (दृढ़ विश्वास) प्रदान कर जिससे तू मुझपर दुनिया की विपत्तियों को आसान कर दे। ऐ अल्लाह! तू जब तक मुझे जीवित रख, मुझे अपने कान, अपनी आँख और अपनी शक्ति से लाभ उठाने का सामर्थ्य प्रदान कर, और इस (लाभ उठाने) को मेरा वारिस (अर्थात् मेरी मृत्यु के बाद तक बाक़ी रहने वाला) बना, और मेरा बदला (प्रतिशोध) उसी से ले जो मुझपर अत्याचार करे, और जो मुझसे दुश्मनी करे उसपर मुझे विजय प्रदान कर, और मेरी विपत्ति (दुर्भाग्य) मेरे धर्म में न बना, और दुनिया को मेरी सबसे बड़ी चिंता और मेरे ज्ञान का अंत (लक्ष्य) और नरक की ओर मेरा ठिकाना न बना, (बल्कि) जन्नत ही मेरा ठिकाना बना और मेरे पापों के कारण मुझपर किसी ऐसे व्यक्ति को प्रभुत्व प्रदान न कर, जो न तुझसे डरे और न मुझपर दया करे।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أعـوذُ بعزَّتِـكَ -لا إلـهَ إلَّا أنـتَ- أن تُضلَّنـي، أنـتَ الحـيُّ الَّـذي لا يمـوتُ، والجـنُّ والإنـسُ يموتونَ.

"अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बि-इज़्ज़तिका - ला इलाहा इल्ला अन्ता - अन् तुज़िल्लनी, अन्तल ह़य्युल-लज़ी ला यमूतो, वल-जिन्नु वल-इन्सु यमूतून" (ऐ अल्लाह! मैं तेरे प्रभुत्व की शरण में आता हूँ - तेरे अलावा कोई सच्चा पूज्य नहीं - इस बात से कि तू मुझे पथभ्रष्ट कर दे। तू वह परम जीवित है जो कभी नहीं मरता, तथा जिन्न और मनुष्य मर जाते हैं।)

- اللَّهـمَ فاطـرَ السَّـماواتِ والأرضِ عـالمَ الغيـبِ والشَّـهادةِ، لا إلـهَ إلَّا أنـتَ، ربَّ كلِّ شيءٍ ومليكَـهُ، أعـوذُ بـكَ مـن شرِّ نفـسي، ومـن شرِّ الشَّـيطانِ وشِرْكِـهِ، وأن أقـترفَ عـلى نفـسي سـوءًا، أو أجُـرَّه إلى مسـلمٍ.

“अल्लाहुम्मा फ़ातिरस्-समावाति वल-अर्ज़ि, आलिमल-ग़ैबि वश्शहादति, ला इलाहा इल्ला अन्ता, रब्बा कुल्लि शैइन व मलीकहु, अऊज़ु बिका मिन शर्रि नफ्सी व मिन शर्रिश्शैतानि व शिर्किहि, व अन् अक़्तरिफ़ा अला नफ्सी सू-अन, औ अजुर्रहू इला मुस्लिम” (ऐ अल्लाह! आकाशों और धरती के रचयिता, परोक्ष और प्रत्यक्ष के जानने वाले! तेरे सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं, हर चीज़ के पालनहार और उसके मालिक! मैं तेरी शरण में आता हूँ अपनी आत्मा की बुराई से और शैतान की बुराई और उसके शिर्क से, और इस बात से कि मैं अपनी आत्मा पर कोई बुराई करूँ, या किसी मुसलमान के लिए बुराई का कारण बनूँ।)

- اللَّهـمَّ أصلِـحْ لي ديـني الَّـذي هـو عصمـةُ أمـري، وأصلِـحْ لي دنيـايَ الَّتـي فيهـا معـاشي، وأصلِـحْ لي آخـرتي الَّتـي إليهـا مَعـادِي، واجعـلِ الحيـاةَ زيـادةً لي في كلِّ خـيرٍ، واجْعَـلِ المـوتَ راحـةً لي مـن كلِّ شرٍّ.

अल्लाहुम्मा अस्लिह् ली दीनी अल्लज़ी हुवा इस्मतो अम्री, व-अस्लिह् ली दुन्याया अल्लती फीहा मआशी, व-अस्लिह् ली आख़िरती

अल्लती फीहा मआदी, वज्-अलिल् ह़याता ज़ियादतन ली फी कुल्लि ख़ैर, वज-अलिल-मौता राह़तन ली मिन् कुल्लि शर्र'' (ऐ अल्लाह मेरे लिए मेरे धर्म को सुधार दे जो कि मेरे मामले का बचाव है, और मेरे लिए मेरी दुनिया को सुधार दे जिसके अन्दर मेरी जीविका (रहन-सहन) है, और मेरे लिए मेरी आख़िरत (परलोक) को सुधार दे जिसकी ओर मुझे लौटना है, और मेरे लिए जीवन को प्रत्येक भलाई में वृद्धि का कारण बना दे, तथा मृत्यु को मेरे लिए प्रत्येक बुराई से मुक्ति का कारण बना दे।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أسـألُكَ العافيـةَ في الدُّنيـا والآخـرةِ، اللَّهـمَّ إنِّي أسـألُكَ العفـوَ والعافيـةَ في دينـي، ودنيـايَ، وأهـلي، ومـالي، اللَّهـمَّ اسـتُرْ عـوراتي، وآمِـنْ روعـاتي.

''अल्लाहुम्मा इन्नी अस्-अलुकल आफ़ियह, फ़िद्दुन्या वल-आख़िरह, अलाहुम्मा इन्नी अस्-अलुकल अफ़्वा वल आफ़ियह फ़ी दीनी व दुन्याया व अह्ली व माली, अल्लाहुम्मस्-तुर औराती व आमिन रौआती'' (ऐ अल्लाह! मैं तुझसे दुनिया और आख़िरत में आफ़ियत (सुरक्षा) का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे क्षमा और अपने दीन, अपनी दुनिया, अपने परिवार और अपने धन में आफ़ियत (सुरक्षा) का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह! मेरी पर्दे वाली चीज़ों (खामियों) पर पर्दा डाल दे और मेरी घबराहटों को सुकून (शांति) में बदल दे।)

- اللَّهـمَّ احفظنـي مـن بـين يـديَّ ومـن خلفـي، وعـن يمينـي وعـن شِـمالي، ومـن فوقـي، وأعـوذُ بعظمتِـكَ أن أُغتـالَ مـن تحتـي.

''अल्लाहुम्मह्-फ़ज़्नी मिन् बैने यदय्या, व मिन् ख़ल्फ़ी, व अन् यमीनी, व अन् शिमाली, व मिन् फ़ौक़ी, व अऊज़ो बि-अज़मतिका अन् उग़ताला मिन् तह़्ती'' (ऐ अल्लाह! मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरे दाएँ से, मेरे बाएँ से तथा मेरे ऊपर से मेरी हिफ़ाज़त कर, और मैं इस बात से

तेरी अ़ज़मत (महानता) की शरण लेता हूँ कि अचानक अपने नीचे से विनष्ट कर दिया जाऊँ।)

- اللَّهـمَّ أحسِـنْ عاقبتـي في الأمـورِ كلِّهـا، وأجِـرْني مـن خِـزيِ الدُّنيـا، وعـذابِ الآخـرةِ.

"अल्लाहुम्मा अह़्सिन आक़िबती फिल उमूरे कुल्लिहा, व अजिर्नी मिन ख़िज़्यिद्-दुनिया व अज़ाबिल-आख़िरह" (ऐ अल्लाह! सभी मामलों में मेरा अंत (परिणाम) अच्छा कर और मुझे दुनिया के अपमान और आख़िरत की यातना से बचा।)

- اللَّهمَّ أعنِّي على ذكرِكَ، وشكرِكَ، وحُسنِ عبادتِك.

"अल्लाहुम्मा अ-इन्नी अला ज़िक्रिका व शुक्रिका व हुस्नि इबादतिक" (ऐ अल्लाह! तू अपने ज़िक्र (जप), अपने शुक्र और अच्छे ढंग से अपनी इबादत पर मेरी मदद कर।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أعـوذُ بـك مـن زوالِ نعمتِـكَ، وتحـوُّلِ عافيتِـكَ، ومـن فُجـاءةِ نقمتِـكَ، ومـن جميـعِ سـخطِكَ.

"अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिन् ज़वालि ने'मतिक, व तह़व्वुलि आफ़ियतिक, व मिन फ़ुजाअति निक़मतिक, व मिन जमीए सख़तिक" (ऐ अल्लाह! मैं तेरी नेमत के छिन जाने, तेरी आफ़ियत के बदल जाने, अचानक तेरे अज़ाब के आने और तेरे हर प्रकार के क्रोध से तेरी शरण में आता हूँ।)

- اللَّهمَّ إنَّك عفوٌّ تحبُّ العفوَ؛ فاعفُ عنِّي.

"अल्लाहुम्मा इन्नका अफ़ुव्वुन तुहिब्बुल अफ्वा, फा'फो अन्नी" (ऐ अल्लाह! तू अत्यंत क्षमा और माफी वाला है, और माफी को पसंद करता है। अत: तू मुझे क्षमा और माफी प्रदान कर।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أسـألُكَ مـن الخـيرِ كلِّـه، عاجِلِـهِ وآجِلِـهِ، مـا علمـتُ منـهُ، ومـا لم أعلَـمْ، وأعـوذُ بـكَ مـن الـشَّرِّ كلِّـه، عاجِلِـهِ وآجِلِـهِ، مـا علمـتُ منـهُ، ومـا لم أعلَـمْ.

“अल्लाहुम्मा इन्नी अस्-अलुका मिनल् ख़ैरि कुल्लिहि, आ’जिलिहि व आजिलिहि, मा अलिम्तु मिन्हु, वमा लम् आ’लम, व अऊज़ो बिका मिनश्-शर्रि कुल्लिहि, आ’जिलिहि व आजिलिहि, मा अलिम्तु मिन्हु, वमा लम् आ’लम (ऐ अल्लाह! मैं तुझसे लोक और परलोक की प्रत्येक भलाई माँगता हूँ, जो मुझे मालूम है और जो मैं नहीं जानता हूँ। तथा मैं लोक और परलोक की प्रत्येक बुराई से तेरी शरण चाहता हूँ, जो मुझे मालूम है और जो मैं नहीं जानता हूँ।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أسـألُكَ مـن خـيرِ مـا سـألكَ منـهُ عبـدُك ونبيُّـك محمَّـدٌ ﷺ، وأعـوذُ بـكَ مـن شرِّ مـا اسـتعاذَ منـهُ عبـدُك ونبيُّـك محمَّـدٌ ﷺ.

"अल्लाहुम्मा इन्नी अस्-अलुका मिन् ख़ैरि मा स-अ-लका अब्दुका व नबिय्युका मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, व-अऊज़ो बिका मिन् शर्रि मस्तआज़ा मिन्हु अब्दुका व नबिय्युका मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम" (ऐ अल्लाह! मैं तुझसे उस भलाई का प्रश्न करता हूँ जो तेरे बंदे और पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुझसे माँगी है, और मैं उस बुराई से तेरी शरण चाहता हूँ जिससे तेरे दास और पैगंबर ने शरण माँगी है।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أسـألُكَ الجنَّـةَ، ومـا قـرَّب إليهـا مـن قـولٍ، أو عمـلٍ، وأعـوذ بـك مـن النَّـار، ومـا قـرَّب إليهـا مـن قـولٍ، أو عمـلٍ.

"अल्लाहुम्मा इन्नी अस्-अलुका अल्-जन्नह वमा क़र्रबा इलैहा मिन् क़ौलिन औ अमल, व-अऊज़ो बिका मिनन्-नारि वमा क़र्रबा इलैहा मिन् क़ौलिन औ अमल” (ऐ अल्लाह! मैं तुझसे जन्नत और उससे क़रीब

कर देने वाले कथन और कर्म का सवाल करता हूँ, तथा मैं जहन्नम और उससे क़रीब कर देने वाले कथन और कर्म से तेरी शरण चाहता हूँ।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أسـألُكَ موجبـاتِ رحمتِـكَ، وعزائِـمَ مغفرتِـكَ، والغنيمـةَ مِـنْ كلِّ بـرٍّ، والسَّـلامةَ مـن كلِّ إثـمٍ، والفـوزَ بالجنَّـةِ، والنَّجـاةَ مِـنَ النَّـارِ.

"अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका मूजिबाति रहमतिक, व अज़ाइमा मगफि-रतिक, वल-गनीमता मिन कुल्ले बिर्र, वस्सलामता मिन कुल्ले इस्म, वल-फ़ौज़ा बिल-जन्नह, वन्नजाता मिनन्नार" (ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरी दया के कारणों और तेरी क्षमा को सुनिश्चित करने वाले कर्मों एवं कथनों, हर नेकी का सुयोग, हर गुनाह से हिफ़ाज़त, जन्नत की प्राप्ति और जहन्नम से मुक्ति का सवाल करता हूँ।)

- اللَّهمَّ جنِّبني مُنكراتِ الأخلاقِ والأعمالِ، والأهواءِ والأدواءِ.

“अल्लाहुम्मा जन्निब्नी मुन्करातिल अख़्लाक़ि, वल-आमालि, वल-अह्वाए, वल-अद्वाए” (ऐ अल्लाह! मुझे बुरी आदतों, बुरे कामों, बुरी इच्छाओं और बुरी बीमारियों से दूर रख।)

- اللَّهـمَّ اغفِـرْ لي ذنـوبي جميعًـا، واهـدِني لأحسـنِ الأخـلاقِ، لا يهـدي لأحسـنِها إلَّا أنـتَ، واصرفْ عنِّـي سـيِّئَها، لا يـصرِفُ عنِّـي سـيِّئَها إلَّا أنـتَ.

"अल्लाहुम्मग़-फ़िर् ली ज़ुनूबी जमीअन, वह्दिनी लि-अह्सनिल्-अख़्लाक़ि, ला यह्दी लि-अह्सनिहा इल्ला अन्ता, वस्-रिफ़ अन्नी सैयिअहा, ला यसरिफ़ु अन्नी सैयिअहा इल्ला अन्ता" (ऐ अल्लाह! मेरे सभी पापों को क्षमा कर दे। क्योंकि तेरे सिवा कोई और पापों को क्षमा नहीं कर सकता। और मुझे सबसे अच्छे व्यवहार का मार्गदर्शन कर। सबसे अच्छे व्यवहार का मार्गदर्शन तेरे सिवा कोई नहीं कर सकता।

तथा मुझसे बुरे व्यवहार को दूर कर दे। क्योंकि मुझसे बुरे व्यवहार को तेरे सिवा कोई दूर नहीं कर सकता।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أسـألُكَ خشـيتَكَ في الغيـبِ والشَّـهادةِ، وأسـألُكَ كلمـةَ الحـقِّ في الغضبِ والرِّضـا، وأسـألُكَ القصـدَ في الفقـرِ والغنـى، وأسـألُكَ نعيـمًا لا ينفـدُ، وقُـرَّةَ عـينٍ لا تنقطـعُ، وأسـألُكَ الرِّضـا بعـدَ القضـاءِ، وبـردَ العيـشِ بعـدَ المـوتِ، ولـذَّةَ النَّظـرِ إلى وجهِـكَ الكريـمِ، والشَّـوقَ إلى لقائِـكَ، في غـيرِ ضرَّاءَ مُـضرَّةٍ، ولا فتنـةٍ مُضلَّـةٍ.

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका ख़श्यतका फिल-ग़ैबि वश्शहादति, व अस्अलुका कलिमतल हक़्क़ि फ़िल-ग़ज़बि वर्रिज़ा, व अस्अलुकल-क़स्दा फ़िल-फ़क़्रि वल-ग़िना, व-अस्अलुका नईमन् ला यन्फ़दु, व-क़ुर्रता ऐनिन ला तन्क़तिओ, व-अस्अलुकर्रिज़ा बादल-क़ज़ाए, व-बर्दल-ऐशि बा'दल-मौति, व लज़्ज़तन-नज़्रि इला वज्हिकल-करीम, वश्शौक़ा इला लिक़ाइका, फ़ी ग़ैरि ज़र्राआ मुज़िर्रतिन, वला-फ़ित्नतिन मुज़िल्लतिन" (ऐ अल्लाह, मैं तुझसे प्रोक्ष और प्रत्यक्ष में तेरे भय का सवाल करता हूँ, तथा मैं तुझसे प्रसन्नता और क्रोध में सत्य बात कहने का साहस माँगता हूँ, और मैं तुझसे ग़रीबी और अमीरी में संयम माँगता हूँ, और मैं तुझसे ऐसी नेमत का सवाल करता हूँ जो कभी खत्म न हो, और आँखों की ऐसी ठंडक माँगता हूँ जो बाधित न हो, और मैं तुझसे फैसले के बाद संतोष, मृत्यु के बाद सुखद जीवन, तेरे सम्मानित चेहरे को देखने का आनंद और तुझसे मिलने की लालसा का सवाल करता हूँ, हानिकारक विपत्ति (दुर्भाग्य) या भ्रामक फित्ने (प्रलोभन) के बिना।)

- اللَّهـمَّ زيِّنَّـا بزينـةِ الإيمـانِ، واجعلْنـا هُـداةً مُهتديـنَ، غـيرَ ضالِّـينَ، ولا مُضلِّـينَ، سِـلمًا لأوليائِـكَ، حربًـا عـلى أعدائِـكَ، نحـبُّ بحبِّـكَ مـن أحبَّـكَ، ونُعـادي بعداوتِـكَ مـن عـاداكَ، أو خالفَـكَ.

"अल्लाहुम्मा ज़ैयिन्ना बि-ज़ीनतिल-ईमान, वज्-अल्ना हुदातन् मुह्तदीन, ग़ैरा ज़ाल्लीन, वला मुज़िल्लीन, सिल्मन लि-औलियाइका, हर्बन अला आदाईका, नुहिब्बो बि-हुब्बिका मन अहब्बका, व-नुआदी बि-अदावतिका मन आदाका, अव ख़ालफ़का" (ऐ अल्लाह! हमें ईमान के आभूषण से सुशोभित कर और हमें मार्गदर्शित पथप्रदर्शक बना, न पथभ्रष्ट और न ही पथभ्रष्ट करने वाला, अपने मित्रों के लिए शांति वाला, अपने शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध करने वाला, हम तेरे प्रेम के कारण उससे प्रेम करते हैं जो तुझसे प्रेम करता है, और हम तुझसे शत्रुता के कारण उससे शत्रुता रखते हैं जो तुझसे शत्रुता रखता या तेरा विरोध करता है।)

- اللَّهـمَّ انقُلْنِي مـن ذلِّ المعصيـةِ إلى عـزِّ الطَّاعـةِ، وأغننـي بحلالِـكَ عـن حرامِـكَ، وبطاعتِـكَ عـن مَعصيتِـكَ، وبفضلِـكَ عمَّـنْ سِـواكَ، يـا حـيُّ يـا قيُّـومُ، يـا ذا الجـلالِ والإكـرامِ.

"अल्लाहुम्मन-क़ुल्नी मिन ज़ुल्लिल-मा'सियति इला इज़्ज़त-ताअति, व-अग़निनी बि-ह़लालिका अन् ह़रामिक, व बि-ताअतिका अन् मा'सियतिका, व बि-फ़ज़्लिका अम्मन सिवाक, या ह़य्यु या क़य्यूमु या ज़ल-जलालि वल-इकरामि" (ऐ अल्लाह! मुझे अवज्ञा के अपमान से आज्ञाकारिता की महिमा की ओर ले जा, और मुझे हलाल प्रदान करके हराम से, अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा अपनी अवज्ञा से और अपनी अनुकंपा प्रदान करके अपने सिवा अन्य से बेनियाज़ कर दे, ऐ परम जीवित! ऐ सब कुछ थामने वाले! ऐ महिमा और सम्मान वाले!)

- اللَّهـمَّ إنِّي أعـوذُ بـكَ مِـنَ الهـمِّ والحَـزَنِ، ومِـنَ العجـزِ والكسَـلِ، ومـن الجُـبنِ والبخـلِ، ومـن المأثـمِ والمَغـرَمِ، ومـن غلبـةِ الدَّيـنِ، وقهـرِ الرِّجـالِ.

"अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिनल् हम्मि वल-ह-ज़नि, व मिनल-अज़्ज़ वल-क-सलि, व मिनल-जुब्नि वल-बुख़्ल, व मिनल-मा'समि

वल-मग़रमि, व मिन ग़-ल-बतिद्दैनि, व-क़हरिर्रिजालि" (ऐ अल्लाह! मैं चिंता और दुःख से, लाचारी और आलस्य से, कायरता और कंजूसी से, पाप और कर्ज़ से, कर्ज़ के बोझ और मनुष्यों के उत्पीड़न से तेरी शरण चाहता हूँ।)

- اللَّهمَّ إنِّي أعوذُ بكَ مِنَ البرَصِ، والجنونِ، والجُذامِ، ومن سيِّئِ الأسقامِ.

"अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिनल-बरसि, वल-जुनूनि, वल-जुज़ामि, व मिन्-सैयेइल्-अस्क़ामि" (ऐ अल्लाह! मैं बर्स, पागलपन, कोढ़ (कुष्ठ) और समस्त बुरी बीमारियों से तेरी शरण लेता हूँ।)

- اللَّهـمَّ ربَّ السَّـماواتِ والأرضِ، وربَّ العـرشِ العظيـمِ، ربَّنـا وربَّ كلِّ شيءٍ، فالـقَ الحـبِّ والنَّـوى، مُنـزلَ التَّـوراةِ، والإنجيـلِ، والفرقـانِ، أعـوذُ بـكَ مـن شرِّ كلِّ ذي شرٍّ أنـتَ آخـذٌ بناصيتِـهِ.

"अल्लाहुम्मा रब्बस-समावाति व रब्बल-अर्शिल-अज़ीम, रब्बना व रब्बा कुल्लि शैइन, फ़ालिक़ल-ह़ब्बि वन्नवा, व-मुन्ज़िलत-तौराति वल-इन्जीलि वल-फ़ुरक़ानि, अऊज़ु बिका मिन शर्रि कुल्लि शैइन अन्ता आख़िज़ुन बि-नासियतिहि" (ऐ अल्लाह! ऐ आकाशों के रब! धरती के रब और महान अर्श के रब! ऐ हमारे रब और हर चीज़ के रब! दाने और गुठली को फाड़ने वाले! तौरात, इन्जील और फ़ुरक़ान (क़ुरआन) के उतारने वाले! मैं हर उस चीज़ की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ जिसकी पेशानी तू पकड़े हुए है।)

- اللَّهـمَّ أنـتَ الأوَّلُ، فليـسَ قبلَـكَ شيءٌ، وأنـتَ الآخـرُ، فليـسَ بعـدَك شيءٌ، وأنـتَ الظَّاهـرُ، فليـسَ فوقَـكَ شيءٌ، وأنـتَ الباطـنُ، فليـسَ دونَـك شيءٌ، اقـضِ عنِّـي الدَّيـنَ، وأغْنِنـي مِـنَ الفقـرِ.

अल्लाहुम्मा अन्तल-अव्वलु फ-लैसा क़ब्लका शैउन, व-अन्तल-आख़िरु फ़-लैसा बा'दका शैउन, व-अन्तज़-ज़ाहिरु फ़-लैसा फौक़का

शैउन, व-अन्तल-बातिनु फ़-लैसा दूनका शैउन, इक़्ज़ अन्नद-दैना व-अग़ानिना मिनल-फ़क़्रि" (ऐ अल्लाह! तू ही अव्वल (सबसे पहले) है, तुझसे पहले कोई चीज़ नहीं। और तू ही आखिर है, तेरे बाद कोई चीज़ नहीं। और तू ही ज़ाहिर है, तेरे ऊपर कोई चीज़ नहीं। और तू ही बातिन है, तुझसे वरे कोई चीज़ नहीं। मेरा क़र्ज अदा कर दे और मुझे निर्धनता से (निकाल कर) धनवान कर दे।)

- اللَّهـمَّ أنـتَ ربِّي لَا إلـهَ إلَّا أنـتَ، خلقتَنـي وأنـا عبـدُك، وأنـا عـلى عهـدِكَ، ووعـدِكَ مـا اسـتطعتُ، أعـوذُ بـكَ مـن شرِّ مـا صنعـتُ، أبـوءُ لـكَ بنعمتِـكَ عـليَّ، وأبـوءُ بذنبـي، فاغفِـرْ لي، فإنَّـه لا يغفِـرُ الذُّنـوبَ إلَّا أنـتَ.

अल्लाहुम्मा अन्ता रब्बी ला इलाहा इल्ला अन्ता, खलक़्तनी व अना अब्दुका, व अना अला अह्दिका व वा'दिका मस्तता'तु, अऊज़ु बिका मिन् शर्रि मा सना'तु, अबूओ लका बि-ने'मतिका अलय्या, व अबूओ बि-ज़ंबी, फग़्फ़िर् ली, फ़-इन्नहु ला यग़्फ़िरुज़्-ज़ुनूबा इल्ला अन्ता" (ऐ अल्लाह तू ही मेरा पालनहार है। तेरे सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं। तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बंदा हूँ, और मैं अपनी शक्ति भर तुझसे की हुई प्रतिज्ञा और तेरे वादे पर क़ायम हूँ। मैंने जो कुछ किया उसकी बुराई से तेरी शरण में आता हूँ। मैं अपने ऊपर तेरी नेमत का इक़रार करता हूँ। और मैं तेरे समक्ष अपने गुनाहों को स्वीकार करता हूँ। अतः मुझे क्षमा कर दे। क्योंकि तेरे सिवा कोई दूसरा गुनाहों को नहीं क्षमा कर सकता।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أسـألُكَ فعـلَ الخـيراتِ، وتـركَ المُنكـراتِ، وحـبَّ المسـاكينِ، وأن تغفـرَ لي وترحمَنـي، وإذا أردتَ بعبـادِكَ فتنـةً فاقبِضْنِـي إليـكَ غـيرَ مَفتونٍ.

"अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका फे'लल-ख़ैराति, व तर्कल-मुन्कराति, व हुब्बल मसाकीनि, व-अन् तग़ाफ़िरा ली व-तर-ह-मनी, व-इज़ा अरद्ता बि-इबादिका फ़ित्नतन फ़क़बिज़्नी ग़ैरा मफ़्तूनिन" (ऐ अल्लाह! मैं तुझसे

अच्छे कामों के करने, बुरे कामों के त्यागने और मिस्कीनों (ग़रीबों) से प्यार करने का सामर्थ्य माँगता हूँ, और यह कि तू मुझे क्षमा कर दे और मुझपर दया कर, और जब तू अपने बंदों को परीक्षा में डालना चाहे, तो मुझे परीक्षा में डाले बिना अपने पास उठा ले।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أعـوذُ بـكَ مـن جَهْـدِ البـلاءِ، ودَرَكِ الشَّـقاءِ، وسُـوءِ القضـاءِ، وشـماتةِ الأعـداءِ.

"अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिन् जह्दिल बलाए, व द-र-किश्शक़ाए, व सूअल-क़ज़ाए, व शमाततिल आ'दाए" (ऐ अल्लाह! मैं विपत्ति (परीक्षण) के कष्ट, दुर्भाग्य से पीड़ित होने, बुरी क़ज़ा (बुरे फैसले) और दुश्मनों के खुश होने से तेरी शरण लेता हूँ।)

- اللَّهـمَّ يـا مقلِّـبَ القلـوبِ، ثبِّـتْ قلبـي عـلى دينِـكَ، اللَّهـمَّ يـا مـصرِّفَ القلـوبِ والأبصـارِ، صرِّفْ قلبـي عـلى طاعتِـكَ.

"अल्लाहुम्मा या मुक़ल्लिबल क़ुलूबि, सब्बित क़ल्बी अला दीनिका, अल्लाहुम्मा या मुसर्रिफ़ल-क़ुलूबि वल-अब्सारि सर्रिफ़् क़ल्बी अला ताअतिका" (ऐ अल्लाह! ऐ दिलों के फेरने वाले! मेरे दिल को अपने दीन पर जमा दे। ऐ अल्लाह! ऐ दिलों और निगाहों का संचालन करने वाले, मेरे दिल को अपनी आज्ञाकारिता की ओर फेर दे।)

- اللَّهـمَّ لا تـدَعْ لي ذنبًـا إلَّا غفرتَـهُ، ولا هـمًّا إلَّا فرَّجْتَـهُ، ولا دَينًـا إلَّا قضيتَـهُ، ولا حاجـةً مـن حوائـجِ الدُّنيـا والآخـرةِ -هـيَ لـكَ رضًـا، ولنـا فيهـا صـلاحٌ- إلَّا قضيتَهـا يـا أرحـمَ الرَّاحمـينَ.

"अल्लाहुम्मा ला तदा' ली ज़ंबन इल्ला ग़फ़र्तह, वला हम्मन इल्ला फ़र्रज्तह, व ला दैनन इल्ला क़ज़ैतह, वला हाजतन मिन हवाएजिद्दुन्या वल आख़िरह – हिया लका रिज़न, व लना फीहा सलाह – इल्ला क़ज़ैतहा, या अर्हमर्राहिमीन" (ऐ अल्लाह! मेरा कोई पाप न छोड़ परंतु

उसे क्षमा कर दे, न कोई चिंता (दुःख) छोड़ परंतु उसे दूर कर दे, न कोई क़र्ज़ छोड़ परंतु उसे पूरा कर दे और न दुनिया और आख़िरत की कोई जरूरत छोड़ – जिसमें तेरी प्रसन्नता हो और उसमें हमारे लिए भलाई हो - परंतु उसे पूरी कर दे, ऐ सब दयालुओं में सबसे दयालु!)

﴿رَبَّنَا تَقَبَّلۡ مِنَّآۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡعَلِيمُ﴾ [البقرة: ١٢٧].

"रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नका अन्तस्-समीउल अलीम" (ऐ हमारे पालनहार! हमसे स्वीकार कर ले, निःसंदेह तू ही सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।)

﴿وَتُبۡ عَلَيۡنَآۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ﴾ [البقرة: ١٢٨].

"व-तुब अलैना इन्नका अन्तत्-तव्वाबुर-रहीम" (और हमारी तौबा क़बूल कर। निःसंदेह तू ही बहुत तौबा क़बूल करने वाला, अत्यंत दयावान् है।)

﴿رَبَّنَا ٱغۡفِرۡ لَنَا وَلِإِخۡوَٰنِنَا ٱلَّذِينَ سَبَقُونَا بِٱلۡإِيمَٰنِ وَلَا تَجۡعَلۡ فِي قُلُوبِنَا غِلّٗا لِّلَّذِينَ ءَامَنُواْ رَبَّنَآ إِنَّكَ رَءُوفٞ رَّحِيمٌ﴾ [الحشر: ١٠].

"रब्बनग़्-फ़िर लना व लि-इख़्वानिनल-लज़ीना सबक़ूना बिल-ईमान, वला तज्अल् फ़ी क़ुलूबिना ग़िल्लन लिल्लज़ीना आमनू, रब्बना इन्नका रऊफ़ुन रहीम" (ऐ हमारे पालनहार! हमें और हमारे उन भाइयों को क्षमा कर दे, जो हमसे पहले ईमान लाए और हमारे दिलों में उन लोगों के लिए कोई द्वेष न रख, जो ईमान लाए। ऐ हमारे पालनहार! तू अति करुणामय, अत्यंत दयावान् है।)

- اللَّهـمَّ إنِّي عبـدُكَ، ابـنُ عبـدِكَ، ابـنُ أمتِـكَ، ناصيتـي بيـدِكَ، مـاضٍ فيَّ حكمُـكَ، عـدلٌ فيَّ قضـاؤُك، أسـألُكَ بـكلِّ اسـمٍ هـو لـكَ، سـمَّيتَ بـه نفسَـك، أو أنزلتَـه في

كتابِك، أو استأثرتَ به في علم الغيبِ عندَك، أن تجعلَ القرآنَ العظيمَ ربيعَ قلبي، ونورَ صدري، وجِلاء حزني، وذَهاب همِّي، اللَّهمَّ علِّمْني منه ما جهلتُ، وذكِّرْني منهُ ما نُسِّيتُ، وارزقْني تِلاوتَهُ آناءَ اللَّيلِ والنَّهارِ على الوجهِ الَّذي يُرضيكَ عنِّي، برحمتِكَ يا أرحمَ الرَّاحمينَ.

"अल्लाहुम्मा इन्नी अब्दुका, इब्नो अब्दिका, इब्नो अ-म-तिक, नासियती बि-यदिक, माज़िन फिय्या हुक्मुक, अद्लुन फिय्या क़ज़ाउक, अस्-अलुका बि-कुल्लिसमिन हुवा लक, सम्मैता बिहि नफ्सक, औ अंज़ल्तहु फी किताबिक, औ अल्लम्तहु अ-ह-दन् मिन् खल्क़िक, अविस्ता'सर्ता बिहि फी इल्मिल ग़ैबि इन्दक, अन् तज्अलल् क़ुरआनल-अज़ीमा रबीआ क़ल्बी, व नूरा ब-स-री, व जलाआ हुज़्नी, व ज़हाबा हम्मी, अल्लाहुम्मा अल्लिम्नी मिन्हु मा जहिल्तो, व ज़क्किर्नी मिन्हु मा नुस्सीतो, वर-ज़ुक़्नी तिलावतहू आना-अल्लैलि वन्नहारि अलल्-वज्हिल्लज़ी युर्ज़ीका अन्नी, बि-रहमतिका या अरहमर्राहिमीन" (ऐ अल्लाह! मैं तेरा दास हूँ, तेरे दास का बेटा, तेरी दासी का बेटा हूँ। मेरी पेशानी तेरे हाथ में है, मेरे ऊपर तेरा आदेश चलता है, मेरे बारे में तेरा फैसला न्यायपूर्ण है। मैं तुझसे तेरे हर उस नाम के द्वारा प्रश्न करता हूँ जिससे तूने अपने आपको नामित किया है, या तूने उसे अपनी किताब में उतारा है, या तूने उसे अपनी मख्लूक़ में से किसी को सिखाया है, या उसे अपने पास प्रोक्ष ज्ञान में सुरक्षित रखा है, कि तू क़ुरआन को मेरे दिल की बहार, मेरी आँखों की रोशनी, मेरे दुःख का निवारण और मेरी चिंता का मोचन बना दे। ऐ अल्लाह! मुझे इसमें से वह सिखा दे जो मैं नहीं जानता, मुझे इसमें से वह याद दिला दे जो मैं भुला दिया गया हूँ और मुझे इसे दिन-रात इस तरह से पाठ करने की क्षमता प्रदान कर वह तुझे मुझसे प्रसन्न कर दे, ऐ दयालुओं में सबसे अधिक दयालु!)

- اللَّهـمَّ إنِّي أعـوذُ بـكَ مـن عـذابِ جهنَّـمَ، ومـن عـذابِ القـبرِ، وأعـوذُ بـكَ مـن فتنـةِ المسيحِ الدَّجَّـالِ، وأعـوذُ بـكَ مـن فتنـةِ المَحيـا والمَـماتِ، اللَّهـمَّ إنِّي أعـوذُ بـكَ مـن المَأثـمِ والمَغـرَمِ.

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिन् अज़ाबि जहन्नम, व मिन् अज़ाबिल-क़ब्र, व-अऊज़ो बिका मिन फ़ित्नतिल मसीह़िद्-दज्जाल, व-अऊज़ो बिका मिन् फ़ित्नतिल मह़्या वल-ममाति, अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिनल-मा'समि वल-मग़रम" (ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूँ जहन्नम की यातना से और क़ब्र की यातना से, तथा मैं तेरी पनाह माँगता हूँ मसीह दज्जाल के फ़ित्ने (परीक्षण) से, तथा मैं तेरी शरण लेता हूँ जीवन और मृत्यु के फ़ित्ने (परीक्षण) से और ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण चाहता हूँ पाप और क़र्ज़ से।)

- اللَّهـمَّ اغفِـرْ لي، واهـدِني، وارزُقْنـي، وعافِنـي، وارحمْنـي، اللَّهـمَّ إنِّي أسـألُكَ خـيرَ المسـألةِ، وخـيرَ الدُّعـاءِ، وخـيرَ النَّجـاحِ، وخـيرَ العمـلِ، وخـيرَ الثَّـوابِ، وخـيرَ الحيـاةِ، وخـيرَ المَـماتِ، وثبِّتْنـي، وثقِّـلْ موازينـي، وحقِّـقْ إيمـاني، وارفَـعْ درجتـي، وتقبَّـلْ صـلاتي، واغفِـرْ خطيئتـي، وأسـألُكَ الدَّرجـاتِ العُـلى مِـنَ الجنَّـةِ، آمـينَ.

"अल्लाहुम्मग़-फ़िर ली, वह्दिनी, वर्ज़ुक़्नी, व आफ़िनी, वर्हमनी। अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका ख़ैरल-मसअलति, व ख़ैरद्दुआए, व ख़ैरन्नजाहि, व ख़ैरल-अमलि, व ख़ैरस-सवाबि, व खैरल-हयाति, व ख़ैरल-ममाति, व सब्बित्नी, व सक्क़िल मवाज़ीनी, व हक़्क़िक़ ईमानी, वर-फा' द-र-जती, व तक़ब्बल सलाती, वग़्-फ़िर ख़तीअती, व अस्अलुकद्-दरजातिल-उला मिनल जन्नति, आमीन।" (ऐ अल्लाह! मुझे क्षमा कर दे, मेरा मार्गदर्शन कर, मुझे जीविका प्रदान कर, मुझे सेहत

दे और मुझपर दया कर। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सर्वोत्तम माँग, सबसे अच्छी दुआ, सबसे अच्छी कामयाबी, सबसे अच्छे काम, सर्वोत्तम सवाब, सबसे बढ़िया ज़िंदगी और सबसे बढ़िया मौत का सवाल करता हूँ। (ऐ अल्लाह!) मुझे दृढ़ बना, मेरे तराजू भारी कर, मेरे ईमान को सच्चा बना, मेरा दर्जा ऊँचा कर, मेरी नमाज़ क़बूल कर और मेरे गुनाह माफ़ कर। तथा मैं तुझसे जन्नत के सर्वोच्च दर्जे माँगता हूँ, आमीन।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أسـألُكَ فواتـحَ الخـيرِ، وخواتِمَـهُ، وجوامِعَـهُ، وأوَّلَـهُ وآخـرَهُ، وظاهـرَهُ وباطنَـهُ، والدَّرجـاتِ العُـلى مِـنَ الجنَّـة، آمـينَ.

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका फ़वातिहल-ख़ैर, व ख़वातिमहू, व जवामिअहू, व अव्वलहू व अवाख़िरहू, व ज़ाहिरहू व बातिनहू, वद्-दरजातिल-उला मिनल जन्नति, आमीन।" (ऐ अल्लाह मैं तुझसे भलाई का उद्घाटन एवं समापन और उसकी व्यापकता, उसका आरंभ एवं अंत, उसका प्रत्यक्ष और आंतरिक और जन्नत में सर्वोच्च स्थानों की माँग करता हूँ। आमीन।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أسـألُكَ أنْ ترفـعَ ذكـري، وتَضـعَ وِزْري، وتُصلـحَ أمـري، وتطهِّـرَ قلبـي، وتحصِّـنَ فَرْجـي، وتُنـوِّرَ قلبـي، وتغفـرَ لي ذنبـي، وأسـألُكَ الدَّرجـاتِ العُـلى مِـنَ الجنَّـةِ، آمـينَ.

"अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका अन् तरफआ ज़िक्री, व तज़आ विज़्री, व तुसलिहा अम्री, व तुतह्हिरा क़ल्बी, व तुहस्सिना फ़र्जी, व तुनव्विरा क़ल्बी, व तग़फ़िरा ली ज़ंबी, व अस्अलुकद्-दरजातिल-उला मिनल जन्नति, आमीन।" (ऐ अल्लाह! मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि तू मेरी चर्चा (इज़्ज़त) बुलंद कर दे, मेरा बोझ उतार दे, मेरे मामले को ठीक कर दे, मेरे दिल को पाक कर दे, मेरे गुप्तांगों की रक्षा कर, मेरे दिल को रोशन कर दे और मेरे पापों को क्षमा करदे। मैं तुझसे जन्नत में सबसे ऊँचे दर्जे माँगता हूँ, आमीन।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أسـألُكَ أن تُبـارِكَ لي في نفـسي، وفي سـمعي وبـصري، وفي روحـي، وفي خَلْقـي، وفي خُلُقـي، وفي أهـلي، وفي مَحيـايَ، وفي مَـماتي، وفي عَمَـلِي، وتقبَّـلْ حسـناتي، وأسـألُكَ الدَّرجـاتِ العُـلى مـن الجنَّـة، آمـينَ.

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका अन तुबारिका ली फी नफ़्सी, व फी सम्ई व बसरी, व फी रूही, व फी ख़ल्क़ी, व फी ख़ुलुक़ी, व फी अह्ली, व फी मह्याया, व फी ममाती, व फी अमली, व तक़ब्बल हसनाती, व अस्अलुकद्-दरजातिल-उला मिनल जन्नति, आमीन।" (ऐ अल्ला! मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि तू मेरी आत्मा, मेरे श्रवण, मेरी दृष्टि, मेरे प्राण, मेरी संरचना, मेरे चरित्र, मेरे परिवार, मेरे जीवन, मेरी मृत्यु और मेरे काम में बरकत प्रदान कर, और मेरे अच्छे कर्मों को स्वीकार कर। तथा मैं तुझसे जन्नत के सर्वोच्च पदों की माँग करता हूँ, आमीन।)

- اللَّهـمَّ احفظْنـي بالإسـلامِ قائمًـا، واحفظْنـي بالإسـلامِ قاعـدًا، واحفَظْنـي بالإسـلامِ راقـدًا، ولا تُشْـمِتْ بي عـدوًّا، ولا حاسـدًا.

"अल्लाहुम्मह्-फज़्नी बिल-इस्लामि क़ाईमन, वह्फज़्नी बिल-इस्लामि क़ाईदन, वह्फ़ज़्नी बिल-इस्लामि राक़िदन, व ला तुश्मित बी अदुव्वन, वला हासिदन" (ऐ अल्लाह! जब मैं खड़ा रहूँ तो इस्लाम से मेरी हिफ़ाज़त कर, जब मैं बैठा रहूँ तो इस्लाम से मेरी हिफ़ाज़त कर और जब मैं सोऊँ तो इस्लाम से मेरी हिफ़ाज़त कर, तथा किसी दुश्मन या ईर्ष्यालु व्यक्ति को मुझ पर प्रसन्न न होने दे।)

- اللَّهـمَّ باعِـدْ بينـي وبـينَ خطايـايَ كـما باعـدتَ بـينَ المـشرقِ والمغـربِ، اللَّهـمَّ نقِّـني مـن خطايـايَ كـما يُنقَّـى الثَّـوبُ الأبيـضُ مِـنَ الدَّنَـسِ، اللَّهـمَّ اغسـلني مـن خطايـايَ بالثَّـلجِ، والمـاءِ، والـبَرَدِ.

"अल्लाहुम्मा बाइद् बैनी व बैना खतायाया कमा बाअद्ता बैनल मश्रिक़ि वल मग़्रिबि, अल्लाहुम्मा नक़्क़िनी मिन् खतायाया कमा

युनक़्क़स्सौबुल अब्यज़ो मिनद्-दनसि, अल्लाहुम्मग़्सिलनी मिन् खतायाया बिस्सल्जि वल्माए वल बरद" (ऐ अल्लाह! तू मेरे बीच और मेरे गुनाहों के बीच ऐसी दूरी कर दे जैसी दूरी तूने पूरब और पश्चिम के बीच की है। ऐ अल्लाह! मुझे मेरे गुनाहों से इस तरह पवित्र कर दे जिस तरह सफ़ेद कपड़ा मैल-कुचैल से साफ़ किया जाता है। ऐ अल्लाह! मुझे मेरे गुनाहों से बर्फ, पानी और ओलों के साथ धुल दे।)

- اللَّهـمَّ أنـتَ المَلِـكُ، لا إلـهَ إلَّا أنـتَ، أنـتَ ربِّي وأنـا عبـدُكَ، ظلمـتُ نفسي، واعترفتُ بذنبـي، فاغفِـرْ لي ذنـوبي جميعًـا، إنَّـه لا يغفـرُ الذُّنـوبَ إلَّا أنـتَ، واهـدِني لأحسـنِ الأخـلاقِ، لا يهـدي لأحسـنِها إلَّا أنـتَ، واصرِفْ عنِّـي سـيِّئَها، لا يـصرِفُ عنِّـي سـيِّئَها إلَّا أنـتَ، لبَّيـكَ وسـعديْكَ، والخـيرُ كلُّـهُ في يديْـكَ، والـشَّرُّ ليـسَ إليـكَ، أنـا بـكَ وإليـكَ، تباركـتَ وتعاليـتَ، أسـتغفرُكَ، وأتـوبُ إليـكَ.

अल्लाहुम्मा अन्तल मलिकु ला इलाहा इल्ला अन्त, अन्ता रब्बी, व-अना अब्दुका, ज़लम्तु नफ़्सी, वा'तरफ़्तु बि-ज़ंबी, फ़ग़-फ़िर् ली ज़ुनूबी जमीअन, इन्नहु ला-यग़्फ़िरुज़्-ज़ुनूबा इल्ला अन्ता, वह्दिनी लि-अह्सनिल्-अख़्लाक़ि, ला यह्दी लि-अह्सनिहा इल्ला अन्ता, वस्-रिफ़ अन्नी सैयिअहा, ला यसरिफ़ु अन्नी सैयिअहा इल्ला अन्ता, लब्बैका व सा'दैका, वल-ख़ैरो कुल्लुहू फी यदैका, वश्शर्रु लैसा इलैका, अना बिका व इलैका, तबारकता व तआलैता, अस्तग़फ़िरुका व अतूबो इलैक" (ऐ अल्लाह! तू ही बादशाह है, तेरे सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं, तू ही मेरा पालनहार है और मैं तेरा बंदा हूँ। मैंने अपने आपपर ज़ुल्म किया है और मैं अपने पापों को स्वीकार करता हूँ। अतः मेरे सभी पापों को क्षमा कर दे। क्योंकि तेरे सिवा कोई और पापों को क्षमा नहीं कर सकता। और मुझे सबसे अच्छे व्यवहार का मार्गदर्शन कर। सबसे अच्छे व्यवहार का मार्गदर्शन तेरे सिवा कोई नहीं कर सकता। तथा

मुझसे बुरे व्यवहार को दूर कर दे। क्योंकि मुझसे बुरे व्यवहार को तेरे सिवा कोई दूर नहीं कर सकता। ऐ अल्लाह! मैं तेरे आज्ञापालन के लिए बार-बार हाज़िर हूँ और हर प्रकार की भलाई तेरे हाथों में है और बुराई की निस्बत तेरी ओर नहीं की जा सकती। मैं तेरी तौफीक़ से हूँ और तेरा ही आश्रय लेता हूँ। तू बरकत वाला और सर्वोच्च है। मैं तुझसे क्षमा याचना करता हूँ और पश्चाताप करता हूँ।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أعـوذُ بـكَ أن أُردَّ إلى أرذلِ العُمُـرِ، وأعـوذُ بـكَ مـن القسـوةِ والغفلـةِ، والذِّلَّـةِ والمسـكنةِ، وأعـوذُ بـكَ مـن الكفـرِ، والفسـوقِ، والشِّـقاقِ، والسُّـمعةِ، والرِّيـاءِ.

"अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिन् अन् उरद्दा इला अरज़लिल्-उमुरि, व अऊज़ो बिका मिनल क़स्वति, वल-ग़फ़लति, वज़्ज़िल्लति, वल-मसकनिति, व अऊज़ो बिका मिनल-कुफ़्रि, वल-फ़ुसूक़ि, वश्शिक़ाक़ि, वस्सुमअति वर्रियाए" (ऐ अल्लाह! मैं इससे तेरी पनाह चाहता हूँ कि उम्र की सबसे जीर्ण अवस्था (बुढ़ापे) की ओर लौटाया जाऊँ, तथा मैं तेरी शरण में आता हूँ क्रूरता, लापरवाही, अपमान और गरीबी से। और मैं तेरी शरण में आता हूँ कुफ़्र, आज्ञा के उल्लंघन, कलह, प्रसिद्धि और दिखावा से।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أعـوذُ بـكَ مِـنْ شرِّ مـا عملـتُ، ومِـنْ شرِّ مـا لم أعمَـلْ، وأعـوذُ بـكَ مِـنْ شرِّ مـا علمـتُ، ومـن شرِّ مـا لم أعلَـمْ.

“ अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिन् शर्रि मा अमिल्तु व मिन शर्रि मा लम् आ’मल्, व अऊज़ो बिका मिन् शर्रि मा अलिम्तु व मिन शर्रि मा लम् आ’लम” (ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण चाहता हूँ उस बुराई से जो मैंने की है और उस बुराई से जो मैंने नहीं की है। तथा मैं तेरी पनाह माँगता हूँ उस बुराई से जो मैं जानता हूँ और उस बुराई से जो मैं नहीं जानता।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أعـوذُ بـكَ مِـنَ الهَـدْمِ والـتَّرَدِّي، ومِـنَ الغَـرَقِ، والحَـرَقِ، والهَـرَمِ، وأعـوذُ بـكَ مِـنْ أن يتخبَّطَنـي الشَّـيطانُ عنـدَ المـوتِ، وأعـوذُ بـكَ أن أمـوتَ لديغًـا، وأعـوذُ بِـكَ مِـنْ طَمَـعٍ يَهـدي إلى طَبَـعٍ.

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिनल-हद्मि वत-तरद्दी, व मिनल-गरक़ि, वल हरक़ि, वल हरमि, व ऊज़ो बिका मिन् अन् य-त-ख़ब्बतनियश्-शैतानो इंदल-मौति, व अऊज़ो बिका अन् अमूता लदीग़ा, व अऊज़ो बिका मिन् त-म-इन यद्दी इला त-ब-इन" (ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण में आता हूँ किसी घर या दीवार के मुझ पर गिरने तथा किसी ऊँचे स्थान से गिर पड़ने से, पानी में डूबने, आग में जलने और अत्यधिक बुढ़ापे से। तथा मैं तेरी शरण में आता हूँ इस बात से कि शैतान मुझे मृत्यु के समय पागल बना दे। तथा मैं तेरी शरण लेता हूँ (किसी ज़हरीले जंतु के) डसने से मरने से, तथा मैं तेरी शरण में आता हूँ उस लोभ से जो बुरे स्वभाव की ओर ले जाता है।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أسـألُكَ الثَّبـاتَ في الأمـرِ، والعزيمـةَ عـلى الرُّشـدِ، وأسـألُكَ شـكرَ نعمتِـكَ، وحُسـنَ عبادتِـكَ، وأسـألُكَ قلبًـا سـليمًا، ولسـانًا صادقًـا، وأسـألُكَ مِـنْ خـيرِ مـا تعلَـمُ، وأعـوذُ بـكَ مِـنْ شرِّ مـا تعلَـمُ، وأسـتغفرُكَ مـمَّا تعلَـمُ، وأنـتَ عـلَّامُ الغيـوبِ.

“अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकस्-सबाता फिल-अम्र, वल-अज़ीमता अलर्-रुश्द, व-अस्अलुका शुक्रा ने’मतिक, व-हुस्ना इबादतिक, व-अस्अलुका क़ल्बन सलीमा, व-लिसानन सादिक़ा, व-अस्अलुका मिन ख़ैरि मा ता’लम, व-अऊज़ो बिका मिन् शर्रि मा ता’लम, व-अस्तग़फ़िरुका मिम्मा ता’लम, व अन्ता अल्लामुल-ग़ुयूब” (ऐ अल्लाह! मैं तुझसे धर्म में स्थिरता और संमार्ग पर दृढ़ता (का सामर्थ्य) माँगता हूँ। तथा मैं तुझसे तेरी नेमत का धन्यवाद करने और तेरी अच्छे

ढंग से उपासना करने का सामर्थ्य माँगता हूँ। मैं तुझसे शुद्ध हृदय और सच्ची ज़बान का सवाल करता हूँ। मैं तुझसे वह भलाई माँगता हूँ, जो तू जानता है और उस बुराई से तेरी शरण चाहता हूँ जो तेरे ज्ञान में है, तथा मैं तुझसे उन सभी पापों के लिए क्षमा याचना करता हूँ, जिन्हें तू जानता है। निःसंदेह तू प्रोक्ष (ग़ैब की बातों) का जानने वाला है।)

- اللَّهـمَّ ألهِمْنِـي رُشـدي، وقنـي شرَّ نفـسي، يـا حـيُّ يـا قيُّـومُ، اللَّهـمَّ زدْني ولا تنقُصْنـي، وأكرِمْنـي ولا تُهنِّـي ، وأعطِنـي ولا تحرمْنـي، وآثـرْني ولا تُؤثـرْ عـليَّ، يـا ذا الجـلالِ والإكـرامِ.

"अल्लाहुम्मा अलहिम्नी रुश्दी, व क़िना शर्रा नफ़्सी, या हय्यो या क़य्यूमो, अल्लाहुम्मा ज़िद्नी वला तन्क़ुसनी, व अकरिम्नी व ला तुहिन्नी, व आ'तिनी व ला तहरिम्नी, व आसिर्नी व ला तू'सिर अलय्या, या ज़ल-जलालि वल-इक्रामि" (ऐ अल्लाह! तू मुझे मार्गदर्शन (सही मार्ग) की प्रेरणा दे और मुझे मेरी आत्मा की बुराई से बचा, ऐ सदा-जीवित! ऐ सब कुछ थामने वाले! ऐ अल्लाह! मुझे बढ़ाकर दे और मुझे कमी न कर, तथा मेरा सम्मान कर और मुझे अपमानित न कर। मुझे प्रदान कर और और मुझे वंचित न कर, मुझे वरीयता दे और दूसरों को मुझ पर वरीयता न दे, ऐ महिमा और सम्मान वाले!)

- اللَّهـمَّ إنِّي أسـألُكَ رحمـةً مـن عنـدِكَ، تهـدي بهـا قلبـي، وتجمـعُ بهـا أمـري، وتلـمُّ بهـا شَـعَثي، وتحفـظُ بهـا غائِبـي، وترفـعُ بهـا شـاهدِي، وتُبيِّـضُ بهـا وجهـي، وتُـزكِّي بهـا عمـلي، وتُلهِمُنـي بهـا رُشـدي، وتـردُّ بهـا الفِـتَنَ عنِّـي، وتعصمُنِـي بهـا مِـنْ كلِّ سُـوءٍ.

"अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका रहमतन मिन इंदिक, तह्दी बिहा क़ल्बी, व तज्मओ बिहा अम्री, व तुलिम्मो बिहा शा'सी, व तहफ़ज़ो बिहा ग़ाइबी, व तर्फओ बिहा शाहिदी, व तुबय्यिज़ो बिहा वज्ही, व

तुज़क्की बिहा अमली, व तुलहिमुनी बिहा रुश्दी, व तरुद्दो बिहल-फ़ि-त-ना अन्नी, व ता'सिमुनी बिहा मिन् कुल्लि सूइन।" (ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरे पास से ऐसी दया का सवाल करता हूँ, जिसके द्वारा तू मेरे दिल का मार्गदर्शन कर, मेरे मामलों को एकजुट कर दे, मेरे बिखरे हुए मामलों को इकटठा कर दे, मेरे प्रोक्ष (कर्मों) की रक्षा कर और मेरे प्रत्यक्ष (कर्मों) को ऊँचा कर दे, उसके द्वारा मेरे चेहरे को उज्जवल कर दे और मेरे कर्मों को पवित्र (शुद्ध) कर दे, उसके द्वारा मुझे सही कामों की प्रेरणा दे और मेरे सामने से प्रलोभनों को दूर कर दे, तथा इसके द्वारा मुझे हर बुराई से सुरक्षित रख।)

- اللَّهـمَّ إنِّي أسـألُكَ صحَّـةً في إيمـانٍ، وإيمانًـا في حُسـنِ خُلـقٍ، ونجاحًـا يتبعُـهُ فـلاحٌ، ورحمـةً منـكَ، وعافيـةً منـكَ، ومغفـرةً ورضوانًـا.

"अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका सेहहतन फी ईमानिन, व ईमानन फी हुस्नि ख़ुलुक़िन, व नजाहन यतबओहू फलाहुन, व रहमतन मिन्का, व आफ़ियतन मिन्का, व मग़फ़िरतन व रिज़वानन।" (ऐ अल्लाह! मैं तुझसे ईमान की शुद्धता, ईमान के साथ अच्छे चरित्र, और ऐसी सफलता जिसके बाद समृद्धि आती है, तेरी ओर से दयालुता, तेरी ओर से आफ़ियत (सुरक्षा), तथा क्षमा और प्रसन्नता माँगता हूँ।)

- اللَّهـمَّ إنَّـكَ تسـمعُ كلامـي، وتـرى مـكاني، وتعلـمُ سرِّي وعلانيتـي، لا يخفـى عليـكَ شيءٌ مـن أمـري، وأنـا البائـسُ الفقـيرُ، والمسـتغيثُ المسـتجيرُ، والوَجِـلُ المُشـفِقُ، المُقـرُّ المعـترفُ إليـكَ بذنبِـهِ، أسـألُكَ مسـألةَ المسـكينِ، وأبتهِـلُ إليـكَ ابتهـالَ المُذنـبِ الذَّليـلِ، وأدعـوكَ دعـاءَ الخائـفِ الضَّريـرِ، دعـاءَ مـن خضعَـتْ لـكَ رقبتُـهُ، وذلَّ لـكَ جسـمُهُ، ورَغِـم لـك أنفُـهُ، فاللَّهـمَّ تقبَّـلْ توبتـي، واغسِـلْ حَوْبتـي، وأجِـبْ دعـوتي، وثبِّـتْ حُجَّتـي، واهْـدِ قلبـي، وسـدِّدْ لسـاني، واسْـلُلْ سَـخِيمةَ صـدري، يـا أرحـمَ الرَّاحمـينَ.

"अल्लाहुम्मा इन्नका तस्मओ कलामी, व तरा मकानी, व ता'लमो सिर्री व अलानियती, ला यख़्फा अलैका शैउन मिन अमरी, व अनल बाईसुल फ़क़ीरु, वल-मुसतग़ीसुल-मुसतजीरु, वल-वजिलुल मुश्फिक़ु, अल-मुक़िर्रुल-मो'तरिफ़ु इलैका बि-ज़ंबिही, अस्अलुका मस्अलतल-मिस्कीनि, व अबतहिलो इलैका इब्तिहालल-मुज़्निबिज़्ज़लीलि, व अद्ऊका दुआअल-ख़ाईफिज़्ज़रीरि, दुआआ मन् ख़-ज़-अत लका रक़्बतुहू, व ज़ल्ला लका जिस्मुहू, व रग़िमा लका अन्फ़ुहू, फल्लाहुम्मा तक़ब्बल् तौबती, वग़िसल ह़ौबती, व अजिब दा'वती, व सब्बित हुज्जती, वह्दि क़ल्बी, व सद्दिद् लिसानी, वस्लुल सख़ीमता सद्री, या अरमहर्राहिमीन।" (ऐ अल्लाह! तू मेरी बातें सुनता है, तू मेरा स्थान देखता है, तू मेरे रहस्यों और मेरे प्रत्यक्ष मामलों को जानता है। मेरे मामलों में से कुछ भी तुझसे छिपा नहीं है। मैं अभागा, गरीब, सहायता और संरक्षण चाहने वाला, भयभीत, दयनीय, तेरे सामने अपने पापों को स्वीकार करने वाला हूँ, मैं तुझसे वैसे ही माँगता हूँ जैसे गरीब माँगता है, मैं तुझसे वैसे ही विनती करता हूँ जैसे नम्र पापी विनती करता है और मैं तुझे वैसे ही पुकारता हूँ जैसे भयभीत, अंधा पुकारता है। उस व्यक्ति के पुकारने की तरह जिसकी गर्दन तेरे आगे झुक गई है, जिसका शरीर तेरे सामने विनम्र हो गया है और जिसकी नाक तेरे सामने दीन हो गई है। अतः ऐ अल्लाह! मेरी तौबा स्वीकार कर, मेरे पाप धो दे, मेरी दुआ क़बूल कर, मेरे तर्क (प्रमाण) को स्थापित (सुदृढ़) कर दे, मेरे दिल का मार्गदर्शन कर, मेरी ज़बान को सीधी (दुरुस्त) कर दे, और मेरे दिल से ईर्ष्या और कपट को बाहर निकाल दे,।

﴿لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبۡحَٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ﴾ [الأنبياء: ٨٧].

"ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्हानका इन्नी कुन्तु मिनज़्-ज़ालिमीन" (तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तू पवित्र है। निश्चय मैं ही अत्याचारियों में हो गया।)

﴿رَّبَّنَا عَلَيۡكَ تَوَكَّلۡنَا وَإِلَيۡكَ أَنَبۡنَا وَإِلَيۡكَ ٱلۡمَصِيرُ ۝٤ رَبَّنَا لَا تَجۡعَلۡنَا فِتۡنَةٗ لِّلَّذِينَ كَفَرُواْ وَٱغۡفِرۡ لَنَا رَبَّنَآۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ﴾ [الممتحنة: ٤-٥].

"रब्बना अलैका तवक्कलना, व इलैका अनब्ना, व इलैकल मसीर, रब्बना ला तजअलना फ़ित्नतन लिल्लज़ीना कफ़रू, वग़-फ़िर लना रब्बना, इन्नका अन्तल अज़ीज़ुल हकीमु" (ऐ हमारे पालनहार! हमने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही ओर लौटे और तेरी ही ओर लौटकर आना है। ऐ हमारे पालनहार! हमें काफ़िरों के लिए परीक्षण न बना और ऐ हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे। निश्चय तू ही प्रभुत्वशाली, पूर्ण हिकमत वाला है।)

﴿سُبۡحَٰنَ رَبِّكَ رَبِّ ٱلۡعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝١٨٠ وَسَلَٰمٌ عَلَى ٱلۡمُرۡسَلِينَ ۝١٨١ وَٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ﴾ [الصافات: ١٨٠-١٨٢].

"सुब्हाना रब्बिका रब्बिल इज़्ज़ति अम्मा यसिफून, व सलामुन अलल-मुर्सलीन, वल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन" (पवित्र है आपका पालनहार, पराक्रम व शक्ति का स्वामी! उस बात से, जो वे बयान करते हैं। तथा सलाम हो रसूलों पर। और हर प्रकार की प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसारों का पालनहार है।)

प्रथम और अंत में हर प्रकार की प्रशंसा केवल अल्लाह के लिए योग्य है, तथा अल्लाह हमारे नबी मुहम्मद, आपके परिवार और आपके सभी साथियों पर दया और शांति अवतरित करे।

विषय सूची

मुख़्यालय का प्राक्कथन 4

प्राक्कथन 6

मीक़ात और एहराम 8

चेतावनी 10

उम्रा के अर्कान, वाजिबात और सुन्नतें 11

उम्रा की विधि 16

चुनिंदा दुआएँ 21

विषय सूची 50

رئاسة الشؤون الدينية
بالمسجد الحرام والمسجد النبوي